झलक

2021

झलक

2021

ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा
भारतीय सर्वेक्षण विभाग

झलक **2021**

संरक्षक
एस.वी.सिंह
निदेशक,ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा

संयोजक
नीरज गुर्जर
उप-निदेशक

संपादक
अरुण कुमार
अधिकारी सर्वेक्षक

सह संपादक
दीपक कुमार
अनुवाद अधिकारी

कला संपादक
पायल आर्य
सर्वेक्षक

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	लेख/रचनायें	रचनाकार/प्रस्तुतकर्ता	पृष्ठ संख्या
1	संपादकीय		1
2	मैं आगे बढ़ता गया, रास्ता बनता गया	अनिल कुमार मेहता, अधिकारी सर्वेक्षक (सेवानिवृत्त)	2
3	कलम की कश्मकश	तूलिका साहनी, भू भौतिकविद, भारतीय भू वैज्ञानिक सर्वेक्षण	15
4	काश मैं पक्षी होता	गौरव थापा,सर्वेक्षक	16
5	कोविड-19	विक्रम कुमार, टी.टी.टी. 'बी'	17
6	वैश्विक महामारी कोरोना (कोविड 19)	अनिल कुमार, सर्वेक्षक,	19
7	कोविड-19 . तू जरा ठहर तो सही	पायल आर्य,सर्वेक्षक	21
8	कौन अजनबी	पायल आर्य,सर्वेक्षक	22
9	एक ड्राइवर ऐसा था	शिव सिंह रावत, अधीक्षक सर्वेक्षक,	23
10	जियोइड: एक परिचय	भास्कर शर्मा, अधिकारी सर्वेक्षक	25
11	जिंदा है तू, इस बात का प्रमाण दे तू	शिखा उनियाल, सर्वेक्षक	28
12	गंगा कविता	नरेश सिंह, सन्तोषी, सर्वेक्षण सहायक,	29
13	पहाड़ी जीवन के संकट	जे.एस. ऑबेरॉय, अधिकारी सर्वेक्षक	30
14	हर इन्सान सोने से पहले	देवेन्द्र पाल सिंह माटा 'कोमल', अधिकारी सर्वेक्षक (सेवानिवृत्त)	32
15	एक यात्रा,	हिंदी के पहले डि लिट के गाँव की यात्रा वृतांत अरुण कुमार , अधिकारी सर्वेक्षक	33
16	कबड्डी-एक सामूहिक खेल	जे.एस. ओबेरॉय, अधिकारी सर्वेक्षक	39
17	कैंडिडेट	रिटायर्ड सु. मेजर प्रेम पिता कु. पायल आर्य	41

नवीन तोमर
Naveen Tomar

भारत के महासर्वेक्षक
Surveyor General of India

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
महासर्वेक्षक का कार्यालय
हाथीबड़कला एस्टेट, पोस्ट बॉक्स नं0 37
देहरादून–248001, (उत्तराखण्ड), भारत
SURVEY OF INDIA
Surveyor General's Office
Hathibarkala Estate ; Post Box No. 37
Dehradun -248001, (Uttarakhand), India

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि भारतीय सर्वेक्षण विभाग, ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा की राजभाषा पत्रिका 'झलक' का डिजिटल प्रकाशन, ई–पत्रिका के रूप में पहली बार किया जा रहा है जिसके डिजिटल माध्यम से प्रकाशित होने से हिन्दी के प्रचार प्रसार हेतु अधिकाधिक प्रचालन में सुगमता होगी। कोविड के दौरान डिजिटल माध्यम से ई–पत्रिका का प्रकाशन सराहनीय कार्य है।

वन संरक्षण की दृष्टि से यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम अपने दैनिक कार्यों में कम से कम कागजों का प्रयोग करें । इस दिशा में बढ़ते हुये हमारे विभाग की गृह पत्रिकायें अब ई–रूप में प्रकाशित हो रही हैं। ज्योडीय एंव अनुसंधान शाखा का इतिहास दो सौ वर्षों से भी ज्यादा पुराना है । 'झलक' के विभिन्न अंकों में हम हिन्दी के उत्तरोत्तर ज्ञानवर्धन के साथ साथ विज्ञान एवं तकनीक के सोपानों से अवगत होते चले आ रहे हैं । मैं आशा करता हूँ कि 'झलक' का यह अंक पूर्ववत् विविधतापूर्ण तथा रोचक होगा ।

मैं पत्रिका में योगदान करने वाले रचनाकारों एवं संपादकों को शुभकामनायें एवं बधाई देता हूँ ।

नवीन तोमर

(नवीन तोमर)
भारत के महासर्वेक्षक

Tel : 00-91-135-2744268 / 2747051-58 Extn. 5001
Fax: 00-91-135-2744268 / 2744064
E-Mail : sgi.soi@gov.in

दूरभाष : ०१३५ २४७१४२८
फैक्स : ००९१-०१३५-2656759
Telephone : 0135 2742015
Fax : 91-135-2742826
E-mail : grb.soi@gov.in

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा
17-ई.सी.रोड पत्र पेटी सं .77
17-E.C.ROAD,Post Box No..77
देहरादून (उत्तराखंड)
Dehradun-248001 ,

संदेश

इस वर्ष गृह मंत्रालय के एक कार्यालय ज्ञापन द्वारा गृह पत्रिकाओं को ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशित करने पर जोर दिया गया था । यह गर्व का विषय है कि इस वर्ष ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा की पत्रिका झलक ई-रूप में प्रकाशित होने जा रही है । लगातार देश के कोन- कोने में क्षेत्रीय कार्यो में,डाटा के विश्लेषण व नई-नई तकनीकी के विकास में तन्मयता से लगे रहने के बावजूद ,जी. एंड आर .बी. के द्वारा पत्रिका का प्रतिवर्ष प्रकाशन इसके अधिकारियों व कर्मचारियों के बौद्धिक स्तर व राजभाषा के प्रति उनके सम्मान को दर्शाता है ।

यही बात इस पत्रिका के बारे में भी कही जा सकती है कि सभी रचनाकारों ने अपने मनोयोग और मेहनत से रचनाएं तैयार की हैं और अपनी ओर से पूर्णता जिसे अंग्रेजी में ' परफेक्शन ' कहा जाता है, उस तक पहुँचने का प्रयास किया है । परंतु यदि इसमें कोई कसर रह जाती है तो इसे मानवीय स्वभाव की चूक समझ कर अनदेखा किया जा सकता है । मैं समस्त रचनाकारों एवम् सम्पादकीय कार्य से जुड़े लोगों का आभार व्यक्त करते हुए शुभकामनाएं देता हूँ।

(एस0 वी0 सिंह)
निदेशक, ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा की पत्रिका झलक का नया अंक प्रकाशित होने जा रहा है । यह अंक ई-रूप में निकलेगा, यह सूचना सुखद आश्चर्य वाली है । यह सर्वविदित है कि ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा में सदैव ही राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय महत्व के कार्य होते हैं। इसलिए भारतीय सर्वेक्षण विभाग में इसकी भूमिका सदैव विशिष्ट रही है । विलियम लैंबटन एवं जॉर्ज एवरेस्ट के नेतृत्व में वृहत त्रिकोणमितीय सर्वेक्षण का जो कार्य आरंभ हुआ था वह आगे कई वर्षों तक चलता रहा, जो कि भारतीय भू-भाग के मानचित्रण की आधारशिला बनी । इसी कार्य कि अभिवृद्धि में ज्योडीय शाखा कार्यालय में विविध अनुसंधान कार्य तथा विकास परियोजनाओं से सम्बन्धित कार्य होते रहे ।

वर्तमान में भी ज्योडीय आधारभूत संरचनाओं के कार्य जैसे - उच्च शुद्धता तलेक्षण का विस्तार सी.ओ.आर.एस. नेटवर्क की स्थापना,ज्योडीय मॉडल का निर्माण,नमामि गंगे परियोजना आदि पर कार्य प्रगति पर है । इसे पूरा करने के लिए निदेशालय के अधिकारी एवं कर्मचारी भी काम में लगे हुए हैं ।

इन व्यस्तताओं के मध्य उन्होंने समय निकाल कर इस पत्रिका में अपना सहयोग दिया , जिस कारण से पत्रिका इस रूप में निकल पा रही है । वास्तव में यह उनके हिंदी भाषा के प्रति सम्मान को व्यक्त करता है। मैं आशा करता हूं कि उनकी मेहनत सफल होगी और पत्रिका लोगों को पसंद आएगी ।

(नीरज गुर्जर)
उपनिदेशक

संपादकीय

कोरोना संक्रमण काल में किसी पत्रिका का संपादन, प्रकाशन करना काफी चुनौतीपूर्ण कार्य है । सबसे बड़ी बात मनः स्थिति की है । कोई ऐसा संक्रमण बहुत व्यापक हो जाता है, जिसका समाधान अभी तक ढूंढ़ा नहीं जा सका हो, तो एक अजीब सी बेचैनी हो जाती है, जो हमारी रचनात्मकता को प्रभावित करती है । ‘झलक’ के इस अंक में कोरोना संक्रमण पर भी आलेख है, जो आम-जन की चिंता के प्रतीक के रूप में है । इसके साथ ही साथ इस निदेशालय में विविध विषयक जो कार्य हो रहे हैं, उन पर परिचयात्मक लेख भी हैं । कुछ संस्मरणात्मक लेख भी हैं, जो सरकारी कार्य के निर्वहन में आने वाली चुनौतियों का गवाक्ष हैं ।वास्तव में यह निदेशालय अनूठा है ।

यहां अधिकारियों और कर्मचारियों को सरकारी कार्य हेतु देश के कोने- कोने में जाना पड़ता है, और स्थानीय प्रशासन से मिलकर काम करना होता है । साथ ही साथ स्थानीय लोगों के संकटों और कष्टों का भी साक्षी बनना पड़ता है । यदि हर एक क्षण को लिपिबद्ध किया जाए तो वृहत खंडों के कई खंड तैयार हो जायेंगे । परंतु काम की व्यस्तता से समय निकाल पाना अत्यंत कठिन होता है । अतः यह कहा जा सकता है कि पत्रिका में प्रयुक्त रचनाएं कठिन समय की सहज अभिव्यक्तियॉ हैं ।

(अरूण कुमार)
अधिकारी सर्वेक्षक,
संपादक

संस्मरण

मैं आगे बढ़ता गया, रास्ता बनता गया

अनिल कुमार मेहता,
अधिकारी सर्वेक्षक (सेवानिवृत्त)

श्री अनिल कुमार मेहता दिनांक 30 सितम्बर 2020 को अधिकारी सर्वेक्षक के पद से सेवानिवृत्त हो गये। उन्हे विभाग की पुरानी कार्य संस्कृति तथा नई डिजीटल युगीन कार्यसंस्कृति में कार्य करने का अवसर मिला था। अपने 36 साल के सेवाकाल में उन्होने कई उतार चढ़ाव देखे। इनका यह लेख हम जैसे जैसे पढ़ते जायेगें विभाग के विभिन्न आयामों से परिचित होते जायेगें। विभाग के नये सदस्यों के लिये यह एक अद्भुत आख्यान है -संपादक

त्रिकोणमितीय संगणक प्रशिक्षण शिविर 1985

मैंने 8 अक्टूबर 1984 में भारतीय सर्वेक्षण विभाग में ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा के दल संख्या 14 में त्रिकोणमितीय संगणक (प्रशिक्षु) पद ग्रहण कर अपनी सरकारी सेवा की शुरुआत की थी। इस त्रिकोणमितीय संगणक (प्रशिक्षु) के प्रशिक्षण में हम कुल 23 प्रशिक्षु थे। हम सभी प्रशिक्षुओं को दल संख्या 14 में ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा के सर्वेक्षण सम्बन्धी सभी विविध आयामों से परिचय कराया गया और उनके क्रियान्वयन से संबंधित प्रशिक्षण दिया गया। इस एक वर्ष के परिचयात्मक प्रशिक्षण के पश्चात अक्टूबर 1985 में, और अधिक विस्तृत प्रशिक्षण व व्यावसायिक गतिविधियों में अनुभव अर्जन हेतु , हमें अलग अलग समूहो में अगले दो वर्षों के लिये ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा के विभिन्न दलों में स्थानांतरित कर दिया गया । मुझे मेरे अन्य दो साथियों आर० के० साहनी व जीत सिंह तोमर के साथ दल संख्या 71(ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा) में भेजा गया।

दल संख्या 71(ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा) मे विभागीय व गैर विभागीय परियोजनाओं के सर्वेक्षण का कार्य किया जाता था। जहां पर मैंने ज्योडेटिक सर्वेक्षण से सम्बंधित संगणना का प्रशिक्षण लिया व विभागीय व गैर-विभागीय परियोजनाओं के सर्वेक्षण कार्यों की संगणना का कार्य करने लगा।आरंभ मे ं जब इस दल से मुझे अपने प्रथम क्षेत्रीय कार्य हेतु पाला मनेरी हाईड्रो इलेक्ट्रीक गैर विभागीय परियोजना में सर्वेक्षण कार्य के लिये जाने को कहा, तो मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं क्षेत्रीय कार्य में जाने के लिये हाँ कहूँ या ना, क्योंकि इससे पहले मुझे अपने शहर से बाहर जाने का बहुत कम अनुभव था और शायद यही वजह थी कि मैंने क्षेत्रीय कार्य पर जाने के लिये तुरन्त मना कर दिया । मैं इस बात से अनभिज्ञ था कि मुझे अपने शहर से बाहर क्षेत्रीय कार्य में जाने में अच्छा भी लग सकता है और यही नहीं इस क्षेत्रीय कार्य में आगे के लिये भी बहुत कुछ सीखने में मदद हो सकती है।परन्तु अज्ञानता वश और डर से मैंने क्षेत्रीय कार्य पर तुरन्त जाने से मना कर दिया था और मेरे स्थान पर मेरे साथी और बैचमेट आर० के० साहनी, को क्षेत्रीय कार्य पर भेज दिया गया। हांलाकि उन्हें कुछ समय बाद वापस बुला कर मेरे अन्य साथी जीत सिंह तोमर, को भेजा गया और मैं मन ही मन खुश था कि अब मैं क्षेत्रीय कार्य में जाने से बच गया। परन्तु मेरी खुशी उस समय फीकी पढ़ गई जब पता चला था कि मुझे ही क्षेत्रीय कार्य हेतु भेजा जा रहा है और जीत सिंह तोमर को उनकी उच्च शिक्षा की परीक्षा देने हेतु वापस बुलाया जा रहा है। वह समय भी आ गया जब मुझे मेरे प्रथम क्षेत्रीय कार्य हेतु पाला मनेरी हाईड्रो इलेक्ट्रिक गैर विभागीय परियोजना के लिये भटवाड़ी, जिला उत्तरकाशी जाने का आदेश दे दिया गया। भटवाड़ी, पहुँच कर मैं सर्वेक्षण टुकड़ी में शामिल हो गया जहां श्री बी० के० नैथानी, सर्वेक्षण सहायक, क्षेत्रीय टुकड़ी का संचालन कर रहे थे। जिन्होंने मुझे परियोजना से सम्बंधित सभी सर्वेक्षण कार्यो की तकनीकी जानकारी दी तथा परियोजना में प्रयोग में लाये जा रहे सभी सर्वेक्षण के यन्त्रों जैसे टी 3 थियोडोलाइट (एक विशेष त्रिकोणमीतिय कोंण मापक यन्त्र)सियाल एम डी 60 व ई एल डी आई 2 (दूरी मापक इलेक्ट्रानिक यन्त्र) के विषय में प्रशिक्षण दिया व प्रेक्षण करना सिखाया।क्षेत्रीय कार्य के दौरान उन्होंने अपने पूर्व के अनुभव भी साझा किये। वह मुझे सर्वेक्षण की हर तकनीक को अच्छे से समझाते रहे, जिससे मुझे क्षेत्रीय कार्य में आनन्द आने लगा। इस बीच अचानक श्री बी० के० नैथानी जी की तबियत खराब हो गई और शेष क्षेत्रीय कार्य की जिम्मेदारी मुझे सौप दी गई । जिसे मैंने पूर्ण निष्ठा और सफलता पूर्वक पूरा किया गया। जिसने मेरे अनुभव और साहस बढ़ाये तथा मुझे एक नया बल दिया। मैं क्षेत्रीय कार्य सफलता पूर्वक पूर्ण कर पूरे उत्साह के साथ वापस अपने मुख्यालय दल संख्या 71 में लौट आया।

इस परियोजना में क्षेत्रीय कार्य के दौरान एक बात जो मेरे दिल को छू गई थी वह यह कि, जब हम क्षेत्रीय कार्य हेतु पहाड़ो के शिखर पर सर्वेक्षण कार्य हेतु जाते थे तब क्षेत्रीय टुकड़ी में सम्मिलित खलासी मुझे सुरक्षा देते हुए पहाड़ पर चढ़ते थे। शायद इसलिये कि, वे जानते थे कि मैं मैदानी भाग से संबंध रखता था और मुझे ऊँचे पहाड़ों पर चढ़ने का अनुभव नहीं था। उनका मेरे लिये इस तरह सोचना मुझे आज भी काफी झकझोर जाता है और उनके प्रति सम्मान का एहसास कराता है क्योंकि वे सभी मेरे से उम्र में काफी बड़े थे इसी कारण मेरा शीश आज भी उनके आदर के लिये झुक जाता है।

अभी क्षेत्रीय कार्य से लौटे मुझे कुछ ही समय हुआ था कि मुझे भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन बैंग्लौर द्वारा प्रस्तावित एक परियोजना के लिए क्षेत्रीय कार्य हेतु बंगलौर जाने के लिये कहा गया जिसे मेरे द्वारा तुरंत स्वीकार कर लिया गया क्योंकि अब मुझे क्षेत्रीय कार्य का अनुभव भी था और मैं सर्वेक्षण कार्य आनन्द के साथ करना सीख चुका था।अपने प्रथम क्षेत्रीय कार्य कें पन्द्रह दिनों बाद मैंने अपने दूसरे व्यावसायिक क्षेत्रीय कार्य हेतु बैंग्लौर के लिये प्रस्थान किया । बंगलौर में हमने अपना क्षेत्रीय शिविर पीनिया एस्टेट में लगाया। इस बार श्री फकीर चंद, सर्वेक्षक टुकड़ी अधिकारी क्षेत्रीय कार्य हेतु मेरे साथ थे, जो कि सर्वेक्षण के कार्य में काफी अनुभवी और निपुण थे ।

चूंकि मैं किसी परियोजना के सर्वेक्षण कार्य में शुरू से ही संलग्न था इसलिए सर्वेक्षण की सभी बारीकियों को अच्छी तरह समझ रहा था जिसने मेरे अंदर एक नयी ऊर्जा का संचार किया और मैं निर्भय हो कर सर्वेक्षण कार्य में रुचि लेने लगा था। श्री फकीर चंद, सर्वेक्षक के साथ कार्य करने में मुझे एक अलग ही अनुभूति हुई क्योंकि वह भी सर्वेक्षण के हर चरण को अच्छी तरह से मुझे समझा रहे थे।जिसने मेरे अन्दर का डर खत्म कर दिया था । क्षेत्रीय कार्य पूर्ण कर हम सभी लोग अपने मुख्यालय दल संख्या 71 वापस आ गए।

मुख्यालय में अपने इस क्षेत्रीय कार्य की संगणना की जिम्मेदारी भी मुझे सौंपी गई जिसे मैंने अपने वरिष्ठ सहयोगियों से सीखा व फिर संगणना कार्य को पूर्ण किया।इस प्रकार की पारम्परिक संगणना के कार्य पहले से ही तैयार प्रोफार्मा पर की जाती थी जिसे एक अनुक्रम में किया जाता था। इसे दो संगणकों द्वारा स्वतंत्र रूप में किया जाता था जिसका मिलान कर त्रुटि संशोधन/जांचा जाता था। कोई त्रुटि पाये जाने पर उसकी पूर्ण जांच की जाती थी व त्रुटि संशोधित कर उसे शुद्ध किया जाता था। जब कभी इस प्रकार की संगणना में दोनों संगणकों के द्वारा की गई संगणना में कोई त्रुटि नहीं मिलती थी तो मन आनन्दित हो जाता था तथा एक प्रकार की संतुष्टि का अनुभव होता था। अब मुझे हर प्रकार की संगणना के कार्यों में भी रूचि आने लगी थी क्योंकि मैंने पहली बार किसी परियोजना के लिये शुरू से आखिरी तक संगणना का कार्य स्वतंत्र रूप से किया था।

वर्ष 1987 में हम सभी प्रशिक्षुओं को ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा में किये जाने वाले अन्य सभी कार्यों क्रमशः ज्वारीय, चुम्बकीय, गुरुत्वीय, खगोलीय, यंत्रों के अंश संशोधन विषयों की पूर्ण जानकारी दी गई तथा एक बार फिर से त्रिकोणमीतिय संगणक के पाठ्यक्रम से परिचय या रिफ्रेश कोर्स कराया गया तथा परीक्षा ली गई जिसे उत्तीर्ण कर हम सभी को 1 जनवरी, 1988 में त्रिकोणमीतिय संगणक के पद पर पदोन्नित कर दिया गया तथा पदोन्नती के उपरान्त मुझे दल संख्या 71 ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा के लिये ही चयनित किया गया। एक बार फिर से मुझे श्री फकीर चंद, सर्वेक्षक के साथ थल सेना के लिये प्रतिष्ठित बोफोर्स तोप की लक्ष्य भेदी जांच हेतु (टारगेटेड कन्ट्रोल प्वाईंट परियोजना) सर्वेक्षण कार्य पर पोखरण (राजस्थान) जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। पोखरण में सर्वेक्षण क्षेत्र सामान्य सर्वक्षण क्षेत्रो से बिलकुल भिन्न था। पोखरण के रेगिस्तान में भीषण गर्मी में हमने लक्ष्य बिंदु नियन्त्रण श्रेणी स्थापित करने हेतु सर्वेक्षण कार्य किया जैसा कि रेगिस्तान की मरु भूमि के बारे में हम जानते है कि गर्मी के कारण रेगिस्तान में गर्मी के दिनों में जब वायु तहों का घनत्व उष्णता के कारण असमान होता है तब पृथ्वी के निकट की वायु अधिक उष्ण होकर ऊपर को उठना चाहती है। परन्तु ऊपर की तहें उन्हें उठने नहीं देती इससे उस वायु की लहरें पृथ्वी के सामानांतर बहने लगती है इसमें प्रायः सामने बढ़ने पर धोखा होता है इसे ही मरीचिका कहतें हैं। मुझे भी इसका आभास हुआ था। जब भी मैं आगे के लक्ष्य की ओर दिशा लेकर आगे बढ़ता तो हमेशा अपने को अलग ही स्थान पर पाता था ऐसा मेरे साथ एक बार नहीं कई बार हुआ। यह एक विलक्षण अनुभव था। रेगिस्तान में हमने धूल भरी आंधी व भीषण गर्मी के बीच सर्वेक्षण के इस विशेष एवं विलक्षण कार्य को पूर्ण किया ।

इस दौरान एक घटना भी घटी। हमारी सर्वेक्षण टुकड़ी क्षेत्रीय कार्य समाप्त कर शिविर की ओर लौट रही थी रास्ते में हम एक ढाबे में चाय पीने के लिए रुके । वहां पर पहले से ही कुछ टूरिस्ट नाश्ता कर रहे थे। जो हमारे पहुँचते ही उठ कर चल दिये। हमारी टुकड़ी के एक साथी भरत किशोर, ने कहा कि जो टूरिस्ट अभी नाश्ता करके गए है वे लोग देहरादून से सम्बन्ध रखते है और मै इन्हें जानता हूँ। उसके यह कहते ही हम सब उनसे मिलने को उत्सुक हो गए। हम चाय पीए बगैर ही चल दिये। वे लोग अब काफी दूर निकल चुके थे । मैंने ड्राइवर से गाड़ी तेज चलाने के लिये कहा । मै उस

समय युवा था और मुझे रोमांच में आनन्द आता था । ड्राईवर नरेन्द्र सिंह भी युवा था उसे भी जोश आ गया और उसने गाड़ी की गति बढ़ा दी । तेज गति से गाड़ी चलाने के कारण हमें कुछ ही समय बाद उनकी गाड़ी दिखाई पड़ी। तब मैंने ड्राइवर से गाड़ी और तेज चलाने को कहा। गाड़ी में बैठे सभी साथियों में जोश उमड़ पड़ा था। उन्हें समीप से देख पाने की कल्पना से हम सभी रोमांचित हुये जा रहे थे। हमारी गाड़ी तेजी से आगे बढ़ रही थी जबकि उनकी गाड़ी आंधी के साथ सड़क पर रेत आ जाने के कारण धीमे-धीमे चल रही थी। सड़क पर काफी रेत फैली थी जिसका हम विश्लेषण नहीं कर पाए। हम यही सोचते रहे कि हम उनके नजदीक पहुंच रहे है। जैसे ही हम उनके बिलकुल समीप पहुंचे तो हमने पाया कि उनकी गाड़ी सड़क पर भारी मात्रा में इक्कठा रेत के कारण रुकी हुई थी। तब ड्राईवर ने बिना समय बर्बाद किये तेजी से गाड़ी का स्टीयरिंग घुमाया जिससे हमारी गाड़ी उनकी गाड़ी से टकराने से बाल-बाल बची और हमारी गाड़ी एक रेत के टीले से टकराकर बंद हो गयी ।इस घटना ने मेरे दिमाग पर गहरा असर डाला और यह एहसास कराया कि ड्राइवर को कभी भी इस प्रकार उत्साहित नहीं करना चाहिये। यह एक बड़ी दुर्घटना का कारण भी बन सकता है।

क्षेत्रीय कार्य समाप्त कर हम सभी वापस अपने मुख्यालय दल संख्या 71 लौट आये। यह प्रतिष्ठित बोफोर्स तोप लक्ष्य श्रेणी नियंत्रण का सर्वेक्षण कार्य हमने मेजर राकेश शर्मा, के मार्ग दर्शन में भारतीय थल सेना के लिए किया था । इस क्षेत्रीय कार्यो को पूर्ण करनेकेउपरान्त एक बार फिरमैं दल संख्या 71ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा में विभागीय/गैर विभागीय परियोजना के क्षेत्रीय कार्य की पारंपरिक संगणना के कार्यो में व्यस्त हो गया । विभाग में कंप्यूटर आने पर धीरे-धीरे संगणना के अधिकांश कार्य पारंपरिक प्रोफार्मो के स्थान पर प्रति क्रियाशील प्रोग्रामिंग द्वारा कंप्यूटर पर स्थानांतरित हो गए और मुझे कंप्यूटर पर सर्वेक्षण कार्यो कि संगणना का कार्य स्वतंत्र रूप से सौंप दिया गया। मेरे द्वारा दल संख्या 71 में की गयी कुछ प्रमुख परियोजनायें (गैर विभागीय) जिनके लिये मैंने संगणना/ विरूपण अध्ययन/ विश्लेषण के कार्य किये थे वे हैं, टिहरी बाँध परियोजना, मनेरी भाली हाइड्रो इलेक्ट्रिक परियोजना, पाला मनेरी हाइड्रो इलेक्ट्रिक परियोजना, हीरा कुंड बाँध परियोजना, कोयना बाँध परियोजना, श्रीसेलम बाँध परियोजना इत्यादि और विभागीय त्रिकोणमितीय श्रृंखलाओं की संगणना आदि। दल संख्या 71 (ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा) में मुझे पारंपरिक संगणना के कार्यो में निपुण करने में स्वर्गीय० श्री एच० एस० नारायण, सर्वेक्षण सहायक का बहुत बड़ा योगदान रहा है। जिन्होंने मुझे संगणना के हर विशेष पहलू से अवगत कराया और जिनके मार्ग दर्शन के कारण ही मैं इन् सभी विभागीय/गैर विभागीय परियोजना के सर्वेक्षण कार्यो की संगणना करने में सफल रहा ।

वर्ष 1997 के सितम्बर माह में मैं विभागीय परीक्षा द्वारा सर्वेक्षक पद हेतु कोर्स संख्या० 400.69 के लिए चयनित हुआ तथा ज्योडीय एवं अनुसन्धान शाखा से राकेश शर्मा व संजय शांडिल्य के साथ उपरोक्त कोर्स के प्रशिक्षण के लिए सर्वे प्रशिक्षण संस्थान (वर्तमान में भारतीय सर्वेक्षण व मानचित्रण संस्थान) हैदराबाद गया। सितम्बर 1999 में सफलता पूर्वक प्रशिक्षण समाप्त कर मुझे पुनः ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा कार्यालय के दल संख्या 72 में स्थानान्तरित किया गया जहाँ से मुझे तुरन्त बद्रीनाथ -नन्द प्रयाग तलेक्षण रेखा के उच्च विशुद्ध तलेक्षण के क्षेत्रीय कार्य के लिए श्री मान सिंह, सर्वेक्षक के साथ भेजा गया। इस क्षेत्रीय कार्य का भारत के महासर्वेक्षक मेजर जनरल ए०के० आहूजा,निदेशक, ज्योडीय एवं अनुसन्धान शाखा, श्री डी०पी० इस्सर, प्रभारी दल संख्या 72 श्री एस एन कुमार, अधीक्षक सर्वेक्षक तथा प्रभारी दल संख्या 71 श्री एच बी मधवाल, अधीक्षक सर्वेक्षक के द्वारा सर्वेक्षण कार्य का निरीक्षण किया गया।वे कार्य व कार्य की प्रगति से काफी प्रसन्न हुए । एक वर्ष दल संख्या० 72 में कार्य करने के उपरान्त मेरा स्थानान्तरण अक्टूबर 2000में दल संख्या 82में हो गया जहाँ मुझे जी०पी०एस० तकनीक द्वारा नियंत्रण बिंदु सर्वेक्षण के लिये उपयोग में लाये जा रहे जीपीएस यंत्रों तथा जी०पी०एस० डाटा की संगणना के लिये उपयोग में लाये जा रहे बर्निज साईन्टीफिक

सॉफ्टवेयर 4.2 का प्रशिक्षण दिया गया। जिसके फलस्वरूप मुझे क्षेत्रीय कार्य से प्राप्त जी०पी०एस० डाटा की संगणना का कार्य सौंपा गया।

वर्ष 2000 में विभाग मेंनयी मानचित्रण पॉलिसी पर विचार किया गया जिसमें दो तरह के मानचित्रों के प्रकाशन को अमल में लाने के लिये एवरेस्ट दीर्घवृत्ताभ (इलिपसॉयड) -डब्लयूजीएस 84 (इलिपसॉयड) से संबंधित तथ्यात्मक परिवर्तन गुणांक (ट्रांसफारमेशन पैरामीटर) प्राप्त करने के लिये परियोजना तैयार की गई । जिसके अंतर्गत सम्पूर्ण भारत में पूर्व में एवरेस्ट दीर्घवृत्ताभ पर ज्ञात नियंत्रण बिन्दुओं पर जीपीएस प्रेक्षण कर डब्लयूजीएस 84 निर्देशांकों से आपस में तुलना कर तथ्यात्मक परिवर्तन गुणांक प्राप्त किये जाने थे। इस क्षेत्रीय कार्यों के लिये मैंने सिक्किम, पश्चिमी बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब तथा हिमांचल प्रदेश राज्यों में जी०पी०एस० प्रेक्षण के क्षेत्रीय कार्य किये । इस परियोजना का क्षेत्रीय कार्य वर्ष 2002 में पूर्ण हुआ और उस समय ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा के निदेशक ब्रिगेडियर डा. बी नागराजन के निर्देशन में मेरे द्वारा उपयुक्त तथ्यात्मक परिवर्तन गुणांकों की संगणना की गई ।
इस बार भी क्षेत्रीय कार्य के दौरान एक घटना घटी। जबमैं जी०पी०एस० प्रेक्षण के लिये इस्लामपुर (पश्चिम बंगाल) जा रहा था, रास्ते में मेरा वाहन खराब हो गया। मैंने मुख्यालय को इसकी सूचना दी तथा मुख्यालय के आदेश प्राप्त होने पर वाहन के मालिक को भी इसके बारे में बताया और वाहन की मरम्मत के लिए ड्राईवर को मैकेनिक लाने के लिए कहा । मैकेनिक के आने पर उसने वाहन कि जांच की व बताया कि इसका इंजन खोलना पड़ेगा और इसमें तीन-चार घंटे का समय लग सकता है। उधर मैकेनिक वाहन ठीक करता रहा और दूसरी तरफ मैने मुख्यालय से संपर्क बना कर रखा । वाहन के इंजन की सर्विस करने के बाद भी वाहन ठीक नहीं हो पाया। मैकेनिक द्वारा अब वाहन की बैटरी डिस्चार्ज का फाल्ट बताया गया जिसके लिए फिर से बैटरी को चार्ज करने के लिये न्यूनतम समय लगभग दो घंटे बताया गया। जिसे स्वीकार करते हुए बैटरी को चार्जिंग के लिए भेजा गया। धीरेधीरे समय बीत रहा था और जी०पी०एस० प्रेक्षण के कार्य को लेकर टेंशन बढ़ता ही जा रहा था क्यूंकि जी०पी०एस० प्रेक्षण का कार्य अगले दिन सुबह 05:30 बजे से शुरू करना था और अभी मुझे लगभग 300 किलोमीटर का सफर तय करना बाकी था ।बैटरी को लगभग दो घंटे चार्ज करने के उपरांत गाड़ी में लगाया गया परन्तु फिर भी वाहन ठीक नहीं हुआ। मैकेनिक द्वारा अब गाड़ी का सेल्फ ठीक करने के लिए कहा गया यह सारा घटना क्रम पश्चिम बंगाल के एक छोटे से कस्बे में चल रहा था। सेल्फ को ठीक करने के लिए भी दो घंटे का समय बताया गया। मेरे द्वारा फिर से मुख्यालय में इसकी सूचना दी गई व दूसरी गाड़ी को किराये पर लेने की अनुमति मांगी गयी । इस पर मुझे सेल्फ ठीक करवाने के पश्चात गाड़ी ठीक न होने पर ही किराये पर गाड़ी लेने का आदेश दिया गया था। तब तक शाम हो चुकी थी। मैं मैकेनिक के साथ सेल्फ ठीक करवाने के लिए दूसरे मैकेनिक के पास गया और इसी दौरान मैने एक ट्रांसपोर्टर से किराये के वाहन की बात भी कर ली थी। सेल्फ ठीक करवाने में दो घंटे का समय लग गया और गाड़ी में लगाने पर गाड़ी फिर भी स्टार्ट नहीं हुई। यह सब मेरे साथ पहली बार हो रहा था। इस बीच ट्रांसपोर्टर द्वारा गाड़ी भेज दी गई। इस गाड़ी के ड्राईवर ने कहा कि एक बार वह हमारी गाड़ी को धक्का देकर कोशिश करता है। जैसे ही उसने हमारी गाड़ी को अपनी गाड़ी से धक्का दिया, हमारे ड्राईवर द्वारा गाड़ी स्टार्ट कर ली गई। तब मैने दूसरी गाड़ी के ड्राईवर को कुछ धन-राशि देनी चाही जिसे उसने स्वीकार नहीं किया। जिसने एक बार फिर से मेरे मन में उसके प्रति सम्मान बढ़ गया तथा यह भी साबित हो गया कि दुनिया में अभी भी कुछ ईमानदार और मददगार व्यक्ति हैं। मैने ड्राईवर का दिल से शुक्रिया अदा किया और अपने ड्राईवर को गंतव्य स्थान पर चलने के लिए कहा। उसे गाड़ी को बीचबंद न करने कि सलाह भी दी । इस समय रात्रि के आठ बज रहे थे और हम सभी दिन भर गाड़ी ठीक करवाने की भाग दौड़ में काफी थक चुके थे ।

चूंकि अभी हमें काफी लम्बा सफ़र तय करना बाकी था इसलिये हमने अपना सफर जारी रखा। रात्रि के दस बजे रास्ते में एक होटल दिखाई दिया मैंने ड्राईवर से कुछ खा पीकर फिर आगे का सफर तय करने की बात कही जिसे उसने मान लिया क्यिोंक वह भी दिनभर से भूखा था।मैंने ड्राईवर से गाड़ी को स्टार्ट ही रहने को कह कर उसे खाने को भेज दिया और मैं खुद गाड़ी में बैठा रहा।मेरी भूख थकान के कारण मर चुकी थी। मैं गाड़ी में ही बैठा रहा। थोड़ी देर बाद वे सभी खाना खा कर आ गये और हमने आगे की राह पकड़ ली। अब हमारी गाड़ी फर्राटे से सड़क पर दौड़ रही थी। कुछ समय बाद मैंने देखा की ड्राईवर को नींद सी आ रही थी। मैं डर गया। कहीं ऐसा न हो कि गंतव्य स्थान जल्दी पहुँचने के चक्कर में कोई दुर्धटना हो जाए। मैंने ड्राईवर से कहा कि कोई सुरक्षित जगह देखकर वह गाड़ी रोक दे और थोड़ी देर आराम कर ले। मेरा इतना कहना था कि, सामने एक हनुमान जी का मंदिर दिखाई पड़ गया । मैंने ड्राईवर से गाड़ी को मंदिर के प्रांगण में खड़ी कर थोड़ा आराम कर लेने के लिए कहा। जिसे उसने मान लिया और वह सो गया। मेरे अन्य साथी तो गाड़ी में पहले से ही सो चुके थे मैंने मंदिर के प्रांगण में स्थित नल से हाथ मुंह धोया और वहीं प्रागंण में बैठ गया। मेरी चिन्ता बढ़ती ही जा रही थी और मुझे एक अजीब सी बैचेनी हो रही थी कि मैं कैसे सुबह 05ः30 बजे से अपना जी. पी. एस. प्रेक्षण का कार्य शुरु कर पाऊंगा। यह सोचते-सोचते दो घंटे बीत गये। रात्रि के 03ः30 बजे थे।मैंने ड्राइवर को उठाया और चलने के लिए कहा। वह तुरन्त उठ गया उसने अपना हाथ-मुँह धोया और हम वहाँ से आगे के लिए प्रस्थान कर गये। सुबह के 05ः15 बजे हम अपने गंतव्य स्थान पर पहुँच गये और मैंने प्रेक्षण स्थल पर 05ः45 बजे अपना जी. पी. एस. प्रेक्षण कार्य शुरु कर दिया और मैंने राहत की लंबी सांस ली ।

दूसरी घटना हिमाचल प्रदेश की है जब मै सोलांग नाम के पर्वतीय चांदें (कंट्रोल प्वाईंट). परजी.पी. एस. प्रेक्षण कार्य कर रहा था। मेरा आधा से ज्यादा जी.पी. एस. प्रेक्षण कार्य हो चुका था। मध्य रात्रि के लगभग 12ः30 बजे होंगे कि किसी जानवर के आने की आहट हुई। आर्कटीक. टेट की खिड़की से बाहर देखा। एक भालू मेरे टेंट के नज़दीक खड़ा था। मेरी व मेरे साथी ईश्वर सिंह की डर के मारे हालत खराब हो गई कि कहीं वह जी. पी. एस. यंत्र के रिसीवर से जुड़े एन्टीना को न गिरा दे। मैं सांस रोके टकटकी लगा कर आर्कटिक टेंट की खिड़की से भालू को निहारता रहा। हमारी थोड़ी सी आहट से भालू हमें व तम्बू को नुकसान पहुँचा सकता था। रात्रि मे नींद की झपकियाँ भी आ रही थी। थोड़ी देर बाद मेरी कब आँख लग गयी पता ही नहीं चला। सुबह जब नींद खुली तो अपने तम्बू पर भालू के पंजों के निशान पड़े देखे। बाद में गाँव वालों से पता चला कि खाने की तलाश में जंगली जानवरों का उस क्षेत्र मे विचरण आम बात थी।

वर्ष 2004 में मुझे अण्डमान व निकोबार द्वीप समूह में जी. पी.एस. सर्वेक्षण के क्षेत्रीय कार्य पर जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ ।इस क्षेत्रीय कार्य पर श्री अर्जुन सिंह, अधिकारी सर्वेक्षक शिविर अधिकारी थे तथा क्षेत्रीय टुकड़ी में मेरे साथ सुभाष कुमार, सर्वेक्षक, एस.एस. रावत, सर्वेक्षक, शंकर प्रसाद, सर्वेक्षक तथा वी. आर शर्मा, यंत्र यांत्रिकी थे । इस सर्वेक्षण के कार्य को दो भागों में विभाजित किया गया था। जिसमें से एक में हमें अपने प्रबन्ध से उत्तर से मध्य अण्डमान तक के द्वीपों में जी. पी. एस. सर्वेक्षण करना था तथा दूसरे भाग में हमें नौसेना की लॉजस्टीक सहायता से मध्य अण्डमान से इन्दिरा प्वाइंट (निकोबार) तक के द्वीप समूहों को जी.पी. एस. सर्वेक्षण करना था । हमारे द्वारा जैसे ही उत्तर से मध्य अण्डमान के द्वीपों पर जी.पी. एस. सर्वेक्षण का कार्य पूर्ण हुआ कि हम सभी को नौसेना के 'संधायक' समुद्री जहाज पर भेज दिया गया । जिसके कैप्टन रवि नौटियाल थे। समुद्री जहाज में सर्वेक्षण के संचालन के लिए शिविर अधिकारी द्वारा जी. पी. एस. प्रेक्षण की रुप रेखा एक दिन पूर्व में कैप्टन केसाथ मीटिंग मे देनी होती थी। जिससे कार्य योजना को अंजाम देने के लिए सही प्रारुप तैयार किया जा सके। इस मीटिंग में सभी क्षेत्रीय टुकड़ियों को भी शामिल किया जाता था ।

अंडमान एवं निकोबार के काला पहाड़ पर जीपीएस प्रेक्षण

नौसेना का जहाज संधायक

इस समुद्री जहाज में सर्वेक्षण कार्यों के संचालन के लिए एक चेतक हैलीकॉपटर भी था।जिसके पायलट अशोक गुप्ता थे। वह भी इस मीटिंग में शामिल होते थे और कार्य योजना की रुप रेखा को अच्छे से समझते थे। क्योंकि अगले दिन की जी. पी. एस. प्रेक्षण की एक्सरसाइज को सफल बनाने में उनका बहुत महत्वपूर्ण योगदान होना रहता था । कार्य योजना की रुप रेखा तैयार होने के उपरान्त हमें अगले दिन हैलीकॉपटर से अपने.अपने गंतव्य द्वीपों पर छोड़ा जाता था तथा सूरज छुपने से पूर्व जहाज पर वापस लाया जाता था। एक दिन की घटना है। जिसकी रूपरेखा एक दिन पूर्व तैयार कर ली गयी थी कि किन किन द्वीपों पर किस.किस क्षेत्र में सर्वेक्षकों को हैलीकॉपटर से छोड़ा जाना था। मुझे काला पहाड़पर वीक्षण;रेकी कार्य हेतु जाना था।काला पहाड़ अण्डमान नीकोबार द्वीप समूह का उच्चतम उंचाई वाला चाँदा था । परन्तु पायलट ने सम्बन्धित द्वीप पर मुझे गलत क्षेत्र में उतार दिया और मुझे सांय 4 बजे उसके द्वारा छोड़े गये उसी स्थान पर मिलने का निर्देश देकर वह दूसरे सर्वेक्षकों को जहाज से अलग.अलग द्वीपों पर छोड़ने के लिए चला गया था । मेरे साथ मेरा सहायक गोपाल था ।हम दोनों चाँदे के निरीक्षण के लिए प्रस्थान करने लगेए कि कुछ दूर चलने पर हमें दो मज़दूर दिखाई पड़े । क्योंकि हमें द्वीप के गलत क्षेत्र में उतार दिया गया था इसलिए हमनें उन मज़दूरों से काला पहाड़ चाँदे पर जाने का सही रास्ता पूछा। उनसें पता चला कि काला पहाड़ तो वहां से काफी दूर था और उस तक पहुंचने के लिये काफी लंबा सफर तय करना था। जिसमें पांच छः घंटे लग सकते थे।हमने उनसे कोई शार्ट कट के बारे में पूछा तो उन्होने सामने दिख रहीं पहाड़ियों की ओर इशारा करते हुये सबसे ऊंची चोटी की दिशा को जाने को बताया। उनके इशारा करते ही हम उस दिशा की ओर आगे बढ़ गये। हमें कोई सुनिश्चित रास्ता दिखाई नहीं पड़ रहा था जिस कारण हमें काफ़ी दिक्कत महसूस होने लगी। क्योंकि रास्ते में सभी जगह कंटीली झाड़ियाँ ही झाड़ियाँ थी। हम अपना रास्ता बनाते हुये आगे बढ़ रहे थे। पर सुनिश्चित रास्ता न होने तथा कंटीली झाड़ियों के कारण हमारी गति बहुत कम थी समय तेज़ी से निकलता जा रहा था और हमें सांय 4 बजे से पहले लौटना भी था। हमने फिर भी साहस नहीं छोड़ा और आगे बढ़ते गये। जैसे ही हमने घड़ी पर निगाह डाली तो पाया कि दोपहर के 01:30 बज रहें थे और अभी हम अपने गंतव्य स्थान से काफ़ी दूर थे। तब हमें रास्ते में मिले उन दो मज़दूरों की बात पर विश्वास हो गया कि वह ठीक कह रहे थे कि वहाँ तक पहुँचने में काफी समय लगेगा । मैंने निर्णय लिया कि हम वापस लौटेंगे क्योंकि सुनिश्चित रास्ता न होने से हमें बहुत समय लगने वाला था और हम चाँदे का निरीक्षण किये बगैर वापस लौट आयेए जहाँ पर हैलीकॉपटर ने हमें छोड़ा था। हमारे पहुँचते ही हैलीकॉपटर भी पहुँच गया हम दोनों हैलीकॉपटर में बैठ गये और पायलट हमें समुद्री जहाज में ले आया । थोड़ी देर बाद समुद्री जहाज के कैप्टन ने मीटिंग में दिन के अनुभव व कार्य के बारे में पूछा।मैंने स्पष्ट शब्दों में बताया कि पायलट द्वारा हमें द्वीप के गलत क्षेत्र में उतार दिया गया था जिससे हम काला पहाड़ चाँदे तक नहीं पहुँच पाये। मीटिंग में ही पता चला था कि उस दिन पायलट द्वारा अन्यसर्वेक्षकों को भी गलत द्वीपों पर उतार दिया गया था। जिसके कारण मीटिंग में यह फैसला लिया गया कि अगले दिन हमें काला पहाड़ चाँदे पर प्रत्यक्ष रुप में उतारा जायेगा।

इस पर मेरी राय ली गयी जिसे मेरे द्वारा स्वीकार कर लिया गया। क्योंकि वह क्षण रोमांचित करने वाला था जिस समय पायलट द्वारा हमें हैलीकॉपटर द्वारा ऊपर से ही सीधे काला पहाड़ पर उतारा जाना था। अगले दिन पूर्व योजनानुसार पायलट ने मुझे व मेरे साथी को सामान सहित एक-एक कर काला पहाड़ पर रस्से से उतारा गया। योजनानुसार हमने जीपीएस प्रेक्षण आरंभ कर दिया। सांय निश्चित समय पर पायलट हैलीकॉप्टर लेकर काला पहाड़ पर आया और हमें रस्से से एक-एक कर उपर खींचा गया और जहाज पर वापस छोड़ा गया । काला पहाड़ पर प्रत्यक्ष रूप से हेलीकॉप्टर द्वारा नीचे उतारना व ऊपर खींचना वास्तव में बहुत ही रोमांचित करने वाला था। जिसे आज भी याद करके मेरे रोगटे खड़े हो जातें हैं। इस क्षेत्रीय कार्य पर मैंने अण्डमान निकोबार द्वीप समूह के दक्षिणी भाग स्थित इन्दिरा प्वाइंट तक जी. पी. एस. प्रेक्षण का कार्य किया। अपने इस क्षेत्रीय कार्य के दौरान मैंने यात्रा के सभी साधन उपयोग में लाए, जैसे- रेल, प्राईवेट समुद्री जहाज(स्वराज द्वीप),नौसेना समुद्री जहाज (संधायक),, चेतक हैलीकॉपटर, स्पीड बोट, डोंगी (स्थानीय समुद्री नाव) आदि। पूरा सफर रोमांच से भरा रहा व प्रकृति के अदभुद नज़ारे देखने को मिले। यह जी. पी. एस.प्रेक्षण का क्षेत्रीय कार्य सुनामी से पूर्व का एक महत्वपूर्ण क्षेत्रीय कार्य साबित हुआ था।

सुनामी के उपरान्त अण्डमान निकोबार द्वीप समूह में दोबारा जी. पी. एस. प्रेक्षण से दोनों क्षेत्रीय कार्यों के अन्तर्गत प्रेक्षित किये गये सामान चांदों के निर्देशांकों का विश्लेषण कर द्वीपों पर आये क्षितिज व उर्ध्वाधर बदलाव की जानकारी प्राप्त करने में मदद मिली थी।

वर्ष 2005 में एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय सर्वेक्षण कार्य के लिए ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा की सर्वेक्षण टुकड़ी का सदस्य बन कर कच्छ के रण में स्थित सर क्रीक(भारत-पाकिस्तान सीमा) सीमा रेखा से संबंधित सर्वेक्षण कार्य हेतु गया। कच्छ का रण, कच्छ की खाड़ी और सिन्धु नदी की डेल्टा के बीच पश्चिमी भारत और दक्षिण पूर्व पाकिस्तान के बीच एक विस्तृत नमक दलदल वाला क्षेत्र है। वहां हमें सीमा स्तम्भों से संबंधित सर्वेक्षण संबंधी कार्य करना था। यह सर्वेक्षण कार्य कर्नल प्रकाश चन्द्र समुद्रा, निदेशक गुजरात दमन व द्वीप भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र, भारतीय सर्वेक्षण विभाग, अहमदाबाद के निर्देशन में बी. एस. एफ. के सहयोग से किया गया। पाकिस्तानी सर्वेक्षण टुकड़ी का नेतृत्व मेजर (रिटायर्ड) मोहम्मद इलहास चौधरी निदेशक साउथ सर्किल, पाकिस्तान सर्वेक्षण विभाग कर रहे थे।

यह भारत और पाकिस्तान का संयुक्त सर्वेक्षण कार्य था।इस क्षेत्रीय कार्य में सभी टुकड़ी अधिकारी ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा से थे ंतथा श्री फूल सिंह, अधीक्षक सर्वेक्षक शिविर अधिकारी थे । इस क्षेत्रीय कार्य में हमारे शिविर भारत-पाकिस्तान सीमा पर स्थित भारतीय सीमा सुरक्षा बल की चौकियों के समीप लगाये गये थे जहाँ से हमें भारत-पाकिस्तान सीमापर स्थित सर्वेक्षण स्तम्भों पर जी. पी. एस. प्रेक्षण के कार्य के लिए बी.एस. एफ. के जवानों के सहयोग सेपहुँचाया जाता था तथा पाकिस्तानी सर्वेक्षण टुकड़ियाँ वहाँ की सीमा सुरक्षा के लिए तैनात रेन्जर्स के सहयोग से पहुँचायी जाती थी। जहाँ पर दोनों देशों की सर्वेक्षक टुकड़ियाँ द्वारा पूर्व में सिन्ध व कच्छ की अधिकारिक सरकारों द्वारा संयुक्त रुप से स्थापित 38 स्तम्भों को नये निर्देशांक देने हेतु सर्वेक्षण कार्य करना था । इसे दोनों देशों की सर्वेक्षण टुकड़ियों द्वारा 5 जनवरी से 10 जनवरी 2005

सर क्रीक सर्वेक्षण संबंधित संगणना कार्य

समयान्तराल में पूर्ण किया गया तथा अंतिम संगणना का कार्य भारत की ओर से मेरे द्वारा तथा पाकिस्तान की ओर से श्री अकरम द्वारा किया गया। प्रारंभिक स्तर पर अलग अलग संगणना करने के पश्चात मेरे एवं अकरम द्वारा संयुक्त रुप से अटारी/बाधा बार्डर पर 8 फरवरी से 11 फरवरी 2005 के दौरान अतिंम संगणना की गई। इसके पश्चात दोनों देशों के सर्वेक्षण प्रमुखों के हस्ताक्षर के पश्चात डाटा एक दूसरे को सौंपा गया और इस ऐतिहासिक और अन्तर्राष्ट्रीय परियोजना का समापन हुआ। इस क्षेत्रीय कार्य का एक-एक क्षण रोमांचित करने वाला था। जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता ।

वर्ष 2005 में ही मुझे 25 वें भारतीय अन्टार्कटिका अभियान के लिए भारतीय सर्वेक्षण विभाग की टीम में शामिल किया गया। इसमें मेरे साथ अनुराग शर्मा सर्वेक्षक साथ में चुने गये थे। इस अभियान पर जाने से पूर्व सभी सदस्यों का अखिल भारतीय आर्युविज्ञान संस्थान, नई दिल्ली में सघन चिकित्सकीय जांचकी गई तथा सभी सदस्यों को बर्फीले स्थान में वातावरण के अनुकूल रहने के अभ्यास हेतु अखिल भारतीय आर्युविज्ञान संस्थान, नई दिल्ली से औली उत्तराखण्ड में आई.टी.बीपी. के कैम्प भेजा गया। सभी सदस्यों के साथ हम दोनों भी आई.टी.बीपी. के कैम्प में पन्द्रह दिन रहे। वहां पर हमें बद्रीनाथ की ऊँची-ऊँची पहाड़ियों पर लम्बी पैदल यात्रा का अभ्यास कराया गया और ट्रेकिंग के लिए प्रयोग में ली जाने वाली रस्सियों की विभिन्न गाँठों के विषय में जानकारी दी गई। बद्रीनाथ मन्दिर से आगे वसुन्धरा फॉल तक ट्रेकिंग करायी गयी इसके अलावा ठँडे स्थानों पर रहने के दौरान आने वाली दिक्कतों व घ्यान देने वाली सावधानियों के बारे में जानकारी दी गई । पन्द्रह दिनों के इस कठोर अभ्यास व प्रशिक्षण के बाद हम अपने मुख्यालय देहरादून वापस आ गये। कुछ दिनों बाद हमें हमारी मेडीकल रिपोर्ट प्राप्त हो गयी। हम दोनों स्वस्थ पाये गये थे तथा हमारा चुनाव 25वें अन्टार्कटिका अभियान पर जाने के लिए हो गया था। हमारे जो अन्य साथी चिकित्सीय जांच में तथा ठण्डे क्षेत्र में रहने के परीक्षण में सफल हुये थे वे भी हमारे साथ अभियान पर गये। हमने अपने अभियान की यात्रा वर्ष 2005 के दिसंबर माह के तृतीय सप्ताह से शुरु की। हम दोनों देहरादून से दिल्ली होते हुए गोवा रेलगाड़ी द्वारा गये। गोवा पहुँच कर हमें अग्निशमन में प्रशिक्षण दिया गया जिसमे आग बुझाने की विभिन्न तकनीकों के बारे में विस्तार से बताया गया । इसके उपरान्त हम हवाई जहाज द्वारा पहले गोवा से मुम्बई, फिर मुम्बई से जोहन्सबर्ग और अन्ततः केप टाउन (दक्षिण अफ्रीका में पहुँच गये । जहाँ हमें होटल ' केप सन' में ठहराया गया । हमें केप टाउन में कुछ दर्शनीय स्थलों पर घुमाया गया तथा भारतीय दूतावास में सभी को एकत्र कर स्वागत समारोह का आयोजन किया गया । तीन दिनों तक होटल में रहने के बाद हमें उस समुद्री जहाज में स्थानान्तरित कर दिया गया जिससे हमें केपटाउन से अन्टार्कटिका तक की यात्रा करनी थी। इस समुद्री जहाज का नाम पारडी बर्ग था । जिस समय हमें समुद्री जहाज में भेजा गया उस समय उसका रख-रखाव का कार्य चल रहा था तथा साथ ही मैत्री स्टेशन में अभियान के सदस्यों के लिए राशन भी भरा जा रहा था। समुद्री जहाज के रख-रखाव का कार्य लगभग एक सप्ताह तक चला । तदोपरान्त हमारा समुद्री जहाज अपने गंतव्य स्थान के लिए चल पड़ा। समुद्री जहाज के प्रस्थान के साथ माहौल खुशनुमा हो गया। तथा सदस्य छोटे-छोटे समूहों में इक्कठा होकर बातचीत करने लगे थे और एक-दूसरे के विषय में जानकारी लेने लगे थे। ऐसे ही समय बीत रहा था । हम समुद्री जहाज के डेक पर आकर प्रकृति के अद्भुत नज़ारों का आनन्द लेते थे तथा कभी सदस्यों के साथ हँसी मजाक करते रहते थे। हमारा जहाज धीरे-धीरे अपने गंतव्य स्थान के लिए आगे बढ़ता जा रहा था कि अचानक जहाज के इंजन की भाप पाईपें फटने लगी। जिसे जहाज पर मौजूद तकनीशियनों द्वारा मरम्मत से ठीक किया जाने लगा और यह सिलसिला लगातार चलने लगा। जैसे जैसे जहाज अपने गंतव्य स्थान की ओर बढ़ रहा था, वातावरण का तापमान भी कम होता जा रहा था जिसे जहाज के इंजन की भाप पाईपें सहन नहीं कर पा रही थी और फटती जा रही थी। अंततः 42 डिग्री अंक्षाश पर हमारे जहाज का इंजन भी फेल हो गया। अब हम गहरे समुद्र के बीच में थे। जहां जहाज का लंगर डालना नामुमकिन था। जिससे जहाज पर सवार अभियान के सभी सदस्यों में भय छाने लगा।

अन्टार्कटिक ले जाने वाले जहाज के अन्दर

अन्टार्कटिक में ग्रीष्मकालीन कुटिया नंदा देवी में

जहाज के कैप्टन द्वारा अभियान के लीडर को सूचना दी गयी कि वह आगे नहीं जा सकेगा। क्योंकि जहाज के इंजन के उपयोग के लिए जो ईंधन उपलब्ध था वह काफी मात्रा में ईंजन की भाप पाईपों के फटने से नष्ट हो गया था और इस हालात मेंशिरमाशीर ,ओसिस तक पहुँच कर वापस आने में काफी अधिक ईंधन की आवश्यकता थी। जहाज के मालिक तथा भारतीय दूतावास के अधिकारियों द्वारा वापसी के लिए अतिरिक्त ईंधन शिरमाशीर ओसिस में उपलब्ध करवाने का आश्वासन दिया गया जिसके उपरान्त तकनीशियनों द्वारा जहाज के इंजन की भाप पाईपों की मरम्मत करते-करते हमारा जहाज शिरमाशर ओसिस की ओर बढ़ता गया। रास्ते में हमने बर्फ की बड़ी-बड़ी शिलायें देखीं। जोकि अलग-अलग बनावट में थी। यह नज़ारा बहुत ही अदभुत तथा रमणीय था । जिसे सिर्फ इस सफर में ही देखा जा सकता था । अपने गंतव्य स्थान पर पहुंचने से पहले ही जहाज को कठोर बर्फ की शिलाओं के मध्य रोक दिया गया जिसके आगे समुद्री जहाज को और आगे नहीं ले जाया जा सकता था। क्योंकि आगे बर्फ ही बर्फ का रेगिस्तान दिखाई पड़ रहा था। इसलिये शिरमाशिर ओसिस को बर्फीला रेगिस्तान कहना ज्यादा उचित होगा जहां दूर दूर तक नजर जा रही थी, वहां बर्फ ही बर्फ दिखाई दे रही थी। यहां से हमें हैलीकॉपटर द्वारा भारत के मैत्री स्टेशन पर पहुँचाया गया। हमने प्रस्तावित कार्ययोजनाके अनुसार एक माह तक लगातार मैत्री चांदे पर जी. पी. एस. प्रेक्षण के साथ साथ मैत्री केआसपास पूर्व में स्थापित 27 चांदों पर जी. पी. एस. प्रेक्षण और 1:5000 मानचित्र पैमाने व 2 मीटर कन्टूर अन्तराल पर 2.2 वर्ग किमी क्षेत्र का प्लेन टेबल सर्वेक्षण (ओरिज़नल सर्वे) काकार्य किया। यह हम दोनों के कठोर परिश्रम व समर्पण से ही संभव हो पाया था। क्योंकि मौसम बहुत खराब था और समय बहुत कम था। कार्ययोजना को सफल करने हेतु हमने जोखिम उठाया और सफल हुये। जिस समय हम मैत्री स्टेशन सें वापसी यात्रा के लिए चले उस समय प्रियदर्शनी झील पर दो-तीन फुट मोटी बर्फ जम चुकी थी। जहाज मालिक ने इंजन के लिए इंधन भिजवाने का जो आश्वासन दिया था, उसे उसने पूरा कर दिया था। हम जिस तरह से आये थे उसी तरह से वापस लौटे। अर्थात, हेलीकाप्टर से जहाज पर, जहाज द्वारा केपटाउन, फिर हवाई जहाज द्वारा केपटाउन से जोहान्सबर्ग, जोहान्सबर्ग से हवाई जहाज द्वारा मुंबई, मुंबई से हवाई जहाज द्वारा दिल्ली और अंत में बस द्वारा दिल्ली द्वारा मुख्यालय देहरादून। इस प्रकार हमारी एक अद्भुत, रोमांच से भरपूर यात्रा सम्पूर्ण हुई।

वर्ष 2006 में मुझे भूटान में पुनात साँगचू हाइड्रो इलेक्ट्रीक परियोजना के सर्वेक्षण कार्य हेतु जा रहे सर्वेक्षण दल में अन्तिम क्षणों में राजेश पाल सर्वेक्षक के अधिकारी सर्वेक्षक पद पर पदोन्नत हो जाने के कारण और उनके द्वारा उक्त क्षेत्रीय कार्य को मना कर देने के कारण शामिल किया गया। इस दल में श्री एच. एस. पवाँर, अधिकारी सर्वेक्षक शिविर अधिकारी, आर. के. साहनी, सर्वेक्षक, संजय कुमार शाँडिल्य सर्वेक्षक,

प्रमोद सिंह रावत, सर्वेक्षण सहायक, पी. एस. रावत, सर्वेक्षण सहायक तथा श्री आर.एस. चौहान, सर्वेक्षण सहायक, शामिल थे। इस क्षेत्रीय कार्य के लिए हमें एक माह का समय दिया गया था। इस एक माह में हमें परियोजना क्षेत्र में वीक्षण (रेकी) कार्य, स्थायी स्तभों का निर्माण , जी. पी.एस. प्रेक्षण कार्य तथा जीपीएस आंकड़ों की संगणना संबंधी कार्य करने थें। दल के सदस्यों के संयुक्त प्रयास द्वारा ये सभी कार्य हमारी टुकड़ियों द्वारा किये गये व हम सभी ने एक माह के कठिन परिश्रम व मेहनत से इस क्षेत्रीय कार्य को सफलता पूर्वक पूर्ण किया।

वर्ष 2007 में एक बार फिर भारत-पाकिस्तान सीमा के महत्वपूर्ण सर्वेक्षण कार्य के लिए दोनों देशों के बीच वार्ता उपरान्त सरक्रीक क्षेत्र का मानचित्र बनाने हेतु सर्वेक्षण कार्य की शुरुआत हुई । इस बार इस ऐतिहासिक और महत्वपूर्ण सर्वेक्षण कार्य के लिये ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा से केवल मुझे ही बुलाया गया था। वर्ष 2005 की भांति सर्वेक्षण का कार्य इस बार भी कर्नल प्रकाश चन्द समुद्रा, निदेशक, गुजरात दमन द्वीप भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र गाँधी नगर, गुजरात के निर्देशन में ही किया गया । वर्ष 2005 की भाँति जी. पी. एस. प्रेक्षण के साथ-साथ संगणना की जिम्मेदारी मुझे सौंपी गयी थी। आन्तरिक संगणना कार्य के लिए मुझे अटारी/बाघा बार्डर पर जाना पड़ा था, जहाँ फिर से एक बार भारत की ओर से संगणना का कार्य मेरे द्वारा तथा पाकिस्तान की और से अकरम द्वारा ही किया गया । संगणना पूर्ण कर मैं वापस अपने मुख्यालय देहरादून लौट आया जिसके बाद टुकड़ी के अन्य सदस्यों द्वारा सरक्रीक का मानचित्र तैयार किया गया।इस बार के क्षेत्रीय कार्य में एक डरावनी और हृदय विदारक घटना घटी थी। चूंकि इस बार ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा सें केवल मेरा ही चयन हुआ था, मैं अकेले ही देहरादून से अहमदाबाद और फिर गुजरात, दमन व दीव भू स्थानिक आंकड़ा केन्द्र से अन्य साथियों के साथ अहमदाबाद से भुज के लिए प्रस्थान किया । भुज से बी. एस एफ. के वाहनों द्वारा हम कोटेश्वर पहुँचे जहाँ पर बी. एस. एफ. का शिविर लगा था । जहाँ बी. एस. एफ. के जवानों ने हमारा स्वागत किया तथा जलपान कराया । वहां हमें थोड़ी देर रुकने के लिए कहा गया था । यहाँ से हमें समुद्री जहाज में सर्वेक्षण के लिए भेजा जाना था जिसके लिए जहाज से हमें लाने के लिए भेजी जाने वाली स्पीड बोट के लिए काफी लम्बा इन्तज़ार करना पड़ा था। हमारे रहने खाने-पीने का प्रबन्ध जहाज पर ही था। इसलिए हम सभी बेसब्री से जेट्टी पर बोट का इन्तज़ार करते रहे । सांय अंधेरा होने पर स्पीड बोट हमें लेने के लिए जेट्टी पर आ गयी । तब तक सभी को भूख सताने लगी थी और सब चाहते थे कि पहले वह ही बोट पर सवार हो, क्योंकि अंधेरा गहराता जा रहा था। बोट चालक टम्टा जी ने लोगों को विभिन्न दलों में बंट कर बोट पर उतरने के लिए बोला। लेकिन सभी का सब्र टूट चुका था। अतः सभी बोट पर सवार हो गये । जैसे ही टम्टा जी ने बोट का इंजन स्टार्ट कर रस्से से बंधी बोट को खुलवाया, बोट पानी के अधिक गतिशील बहाव के कारण धारा के साथ बह गयी और जेट्टी के एक स्तम्भ से टकरा गयी। देखते ही देखते बोट पानी के तेज बहाव के साथ बहने लगी। हम सभी डर गये। रात के अंधेरे के साथ यह डर बढ़ता गया। हमें नाविक की सलाह न मानने का पछतावा होने लगा था। पर कहते हैं कि होनी बड़ी बलवान होती है। जो होना होता है वह होकर ही रहता है। हम सभी इतने डरे व सहमे हुए थे कि हमारे मुँह से शब्द नहीं निकल रहे थे । परन्तु नाविक टम्टा जी ने अपना साहस और धैर्य नहीं खोया था। उन्होने बोट को पानी की धारा के साथ बहने दिया। क्योंकि वह जानते थे कि अगर उन्होने धारा के विपरीत बोट को तेजी से मोड़ा तो बोट पलट सकती थी। बोट पर भार बहुत ज्यादा था। वह काफी अनुभवी नाविक थे। उन्होंने समझदारी दिखाते हुये पानी के बहाव के साथ-साथ लम्बा घुमाव लिया तथा हम सभी को जहाज पर सुरक्षित पहुँचाया दिया। जहाज पर पहुँच कर हमें कैबिन में रहने की जगह दी गयी। जहाज से ही स्पीड बोट द्वारा हम सभी को अलग-अलग स्पीड बोटों से अपने-अपने गंतव्य चाँदों पर सर्वेक्षण के लिए प्रतिदिन ले जाया जाता था व हम सभी पुनः लौट कर जहाज पर ही रात्रि विश्राम करते थे। आज भी जब मेरे स्मृति पटल पर वह दृश्य सामने आता है तो मेरे रौंगटे खड़े हो जाते हैं।

वर्ष 2007 के अन्त में मैंने सर्वेक्षक से अधिकारी सर्वेक्षक पद के लिए विभाग द्वारा आयोजित एल. डी. ई. परीक्षा उत्तीर्ण की तथा स्थानान्तरण पर पंजाब व चंडीगढ़ भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र चंडीगढ़ में अधिकारी सर्वेक्षक के पद पर पदभार ग्रहण किया।जहाँ पर मुझे अंकीय मानचित्र अनुभाग में अनुभाग अधिकारी की जिम्मेदारी सौंपी गयी। इसके साथ-साथ क्षेत्रीय कार्यों जैसे राष्ट्रीय जी. सी. पी. लाईब्रेरी के लिए जी. सी. पी. चाँदो के वीक्षण (रेकी) का कार्य, राष्ट्रीय शहरी सूचना प्रणाली (एन यू आई एस) परियोजना के अर्न्तगत पंजाब, राज्य में क्रमशः चण्डीगढ़, भटिंडा, अमृतसर, जालंधर, लुधियाना व पटियाला शहरों के लिए सर्वेक्षण कार्य किया। जिसमें जी. पी. एस. प्रेक्षण तथा तलेक्षण का कार्य शामिल था। इस कार्य में मेरे साथ रमन वर्मा भी सहयोगी थे। इन दोनों कार्यों में उपग्रही चित्रों पर चिन्हित स्थानों को भूमि पर पहचान कर उन स्थानों पर नियन्त्रण बिन्दु स्थापित किया गया। इन नियन्त्रण बिन्दुओं को उपग्रही चित्रों पर भी अंकित किया गया। इस भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र में मेरा मुख्य कार्य अंकीय मानचित्र अनुभाग में किये जा रहे अंकीय मानचित्रों के पर्यवेक्षण का था। राष्ट्रीय शहरी सूचना प्रणाली के अन्तर्गत किये गये सभी शहरों के लिए संगणना का कार्य तथा रंजीत सागर बाँध परियोजना के लिए संगणना के कार्य भी मेरे द्वारा किये गये। इस भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र से मुझे रिफ्रेशर कोर्स सं. 495 के लिए भारतीय सर्वेक्षण विभाग के सर्वेक्षण और मानचित्रण संस्थान हैदराबाद भेजा गया । इस पाठ्यक्रम के पश्चात मुझे मेरे अन्य साथियों के साथ दिल्ली राज्य स्थानिक डेटा इन्फ्रास्ट्रक्चर परियोजना (डीएसएसडीआई) के लिए अभ्याग्रहण पर भेजा गया। जहाँ पर मैंने दिल्ली राज्य के कुछ जिलों के पहले से ही तैयार भौगोलिक सूचना प्रणाली से संबंधित आंकड़ों की गुणवत्ता की जांच (क्यू ए/क्यू सी) की । फिर वापिस अपने मुख्यालय पंजाब व चंडीगढ़ भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र, चन्डीगढ़ लौटकर अपने अनुभाग का कार्यभार संभाल लिया। लेकिन शायद मुझे दिल्ली राज्य स्थानिक डेटा इन्फ्रास्ट्रक्चर परियोजना में किये जा रहे अन्य कार्यों को भी सीखना था। जिसके लिए मुझे दोबारा इस परियोजना में अभ्याग्रहण पर भेजा गया इस बार मुझे दिल्ली राज्य के सभी 9 जिलों के लिए स्थलाकृतिक सर्वेक्षण कार्य की गुणवत्ता की जांच (क्यू ए/क्यू सी) का कार्य सौंपा गया। यह कार्य पूरा करके छः माह बाद मैं पुनः अपने मुख्यालय चंडीगढ़ में वापस आया। कुछ समय बाद एक बार फिर इस परियोजना के लिए दिल्ली गया । इस बार मुझे इस परियोजना की अंकीय मानचित्रण के अनुभाग का कार्य सौंप दिया गया । इस अनुभाग में विभिन्न प्रकार के क्रिया-कलापों जैसे स्थालिकृतिक तथा भौगोलिक सूचनाओं को मानचित्रों में उपयुक्त स्थानों पर प्रदर्शित करना, त्रिविमीय संरचनात्मक निरूपण (3 डी टेक्सचरिंग) आदि के कार्य किये थे। यहां डाटा की सुरक्षा पर पूर्ण ध्यान दिया जाता था। इस परियोजना से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला तथा इसने मेरे भारतीय सर्वेक्षण विभाग के अनुभवों को बढ़ाया। इस परियोजना के सभी कार्य निदेशक मेजर जनरल गिरीश कुमार के निर्देशन में किये गये थें । इस परियोजना के उपरोक्त कार्य संपन्न कर वर्ष 2011 के अन्त में मैं वापस अपने मुख्यालय चंडीगढ़ आ गया। जहाँ से मेरा स्थानान्तरण पुनः ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा में हो गया। यहाँ पर मुझे उपग्रह ज्योडीय विंग में स्थानान्तरित किया गया। उस वक्त श्री वीरेन्द्र दत्त सकलानी इस विंग के प्रभारी अधिकारी थे।जहाँ मैंने राष्ट्रीय जी. पी.एस. डाटा सेन्टर में अनुभाग अधिकारी का पदभार ग्रहण किया। जिस समय मेरा स्थानान्तरण उपग्रह ज्योडीय खंड में किया गया उस समय राष्ट्रीय जीसीपी लाईब्रेरी परियोजना (द्वितीय चरण) के अर्न्तगत जी. पी. एस. प्रेक्षण का क्षेत्रीय कार्य प्रगति पर था जिसे सम्पन्न करवाने में मैंने अपना योगदान दिया ।

वर्ष 2015 में, मैं भारत म्यांमार (बर्मा) सीमा पर क्षेत्रीय कार्य हेतु शिविर अधिकारी का कार्यभार सौंपा गया। इसमें जी. पी. एस. सर्वेक्षण का मुख्य कार्य था। मेरे साथ ज्योडीय एवं अनुसंधान से रवि प्रकाश, सर्वेक्षक तथा जगदीप सिंह सर्वेक्षक साथ गये थे। मेघालय व अरुणाचल प्रदेश भू-स्थानिक

आंकड़ा केन्द्र, शिलांग से कुछ सर्वेक्षकों को भी इस कार्य में सम्मिलित किया गया था। इस महत्वपूर्ण राष्ट्रीय सर्वेक्षण कार्य में नौवी असम रायफल ने हमें पूरा सहयोग दिया था।

वर्ष 2017 में मुझे एक बार फिर से खलाँग चू हाईड्रो इलेक्ट्रिक परियोजना, भूटान के सर्वेक्षण कार्य के लिए शिविर अधिकारी की जिम्मेदारी सौंपी गयी। मेरे साथ संजय शांडिल्य, कमल मोहन पंत, रवि प्रकाश (सभी अधिकारी सर्वेक्षक) बाबू लाल, सर्वेक्षण सहायक, जितेन्द्र सिंह तथा एस. के0 भटनागर, सर्वेक्षक परियोजना के सर्वेक्षण कार्य के लिए गये । संजय शाँडिल्य, कमल मोहन पंत, रवि प्रकाश तथा बाबू लाल, ने जी.पी. एस. प्रेक्षण द्वारा नियन्त्रण बिन्दुओं के क्षैतिज निर्देशांकों के लिए तथा जितेन्द्र सिंह व एस. के. भटनागर द्वारा परियोजना के मुख्य-मुख्य स्थानों के लिए उच्च विशुद्ध तलेक्षण द्वारा तलचिन्हों की एम.एस.एल ऊचाईयाँ के लिये कार्य किये । एक माह के अथक प्रयास व कठिन परिश्रम से हमारे द्वारा यह कार्य पूर्ण किया गया । परियोजना के लिए तत्कालिकनियन्त्रण बिन्दुओं के निर्देशाकों की संगणना का कार्य रवि प्रकाश अधिकारी सर्वेक्षक द्वारा क्षेत्र में किया गया तथा परियोजना के प्राधिकारी के सर्पुद कर दिया गया। क्षेत्रीय कार्य को सफलता पूर्वक पूर्ण कर हम सभी अपने मुख्यालय लौट आये।

मेरे द्वारा वर्ष 2012 से 2020 तक इन उपरोक्त कार्यों के अतिरिक्त समय-समय पर स्थापना व लेखा अधिकारी पद का अतिरिक्त कार्यभार भी संभाला गया और तकनीकी कार्यों के अतिरिक्त कार्यालय मे प्रशासनिक कार्यों में भी मैंने अपना सहयोग दिया ।

अंत में मैं अपने इस सेवाकाल के दौरान अपने सभी उच्चाधिकारियों का धन्यवाद देना चाहता हूँ जिनके दिशा निर्देशों व सहयोग से उपरोक्त दायित्वों को पूरा करने में सफल रहा। मैं उन सभी साथी सहकर्मियों का सहयोग कैसे भूल सकता हूँ, जो अगर न मिला होता तो भला मैं इतने महत्वपूर्ण कार्य सहजता से कैसे कर पाता। जीवन एक छोटा सफर है जिसमें हम सभी लोग छोटी बड़ी, साधारण या विशेष घटनाओं से कुछ न कुछ सीखतें हैं। मैंने भी इन घटनाओं से बहुत कुछ सीखा और अपने व्यक्तित्व को निखारता गया।

कविता

कलम कि कश्मकश

तूलिका साहनी, भू भौतिकविद,
भारतीय भू वैज्ञानिक सर्वेक्षण
पुत्री आर. के. साहनी, तकनीकी स्टॉफ अधिकारी

पक्ति लिखूं, पृष्ठ लिखूं
या पूरी किताब लिखूं
ह्नदय खोल कर प्रसन्नता व्यक्त करूं
कोई संवाद, या अन्तर्मन का अवसाद लिखूं
वर्णन करूं काल चक्र के प्रपंच का,
या हृदय एवं मस्तिष्क का वाद-विवाद लिखूं
लिख डालूं कथा मिलन की,
या वियोग में बहती अश्रुधार लिखूं
क्या लिख डालूं सूर्य का प्रचण्ड ताप
या माटी की सुगंध के लिए, धरती पर पड़ती बौछार लिखूं
द्वन्द लिखूं, निशा और प्रभात का
या उद्यानों की बहार लिखूं
खेत लिख डालूं लहलहाते हुए
या बंजर और उजाड़ लिखूं
लिखूं, प्रेम प्रसंग कोई, वह मैत्री, वह प्यारा सा सम्बन्ध कोई,,,
वह चुप्पी को चुपचाप तोड़ती तरंगे, करती जो भाव प्रचार लिखूं
वर्णन करूं, ऊंचे शिखरों का,
या मार्ग के गर्त हजार लिखूं
पुष्प की सुगंध उकेरूं पृष्ठ पर,
या कंटकों की भरमार लिखूं
चढ़ूं शिखर सफलता के,
या चोटिल कर देने वाली हार लिखूं?
लिखूं दीप के प्रकाश को,
या घना अंधकार लिखूं
आभार लिखूं, अधिकार लिखूं
लिखूं नक्काश कोई, या रंग बिखेरता चित्रकार लिखूं
करूं बातें आस्था की,
या करबद्ध हो 'पालनहार' लिखूं
भूखडं लिखूं, व्योम लिखूं
या गुंजन करता ओम लिखूं
लिखूं बनारस के घाट, या केदारनाथ के कपाट लिखूं
लिखूं कथा ब्रह्माण्ड की, बनकर पंडित प्रकांड लिखूं
क्षुधा, पिपासा, या निराशा लिख डालूं
या हर तृप्ति एवं आशा के द्वार लिखूं
चंचल, शांत, क्लांत लिखूं
चाहे सुन्दर कोई प्रान्त लिखूं
तोड़ डालूं सीमाएं, हिन्द या अथाह प्रशांत लिखूं
स्वाद लिखूं सत्कार का, या सच्चे मन से धन्यवाद लिखूं
कथा लिखूं-गद्य, फिर काव्य-कल्प लिखूं?
अधिक या अल्प लिखूं
प्रचार लिखूं या सुविचार लिखूं
या सपनों का आकार लिखूं
क्या लिखूं आज अगणित, असंख्य विचार
मैं कलम हॅूं बस यही चाहती हूं
लिखूं तो केवल आदर लिखूं तो सत्कार लिखूं
ग्रीष्म शीत चाहे रात्रि भोर लिखूं
न कोई शब्द कठोर लिखूं
आज लिखूं तो घृणा नहीं, लिखूं तो बस प्यार लिखूं ।

कविता
काश मैं पंछी होता

गौरव थापा,सर्वेक्षक

काश मैं पंछी होता
खुले गगन में उड़ता फिरता
जब मन करता रूकता बड़ता
नहीं किसी कि फ़िक्र मैं करता

काश मैं पंछी होता
प्रकृति के करीब मैं होता
शहरों का जहाँ शोर न होता
छोटी खुशियों में खुश होता
न दिखावे कि होड़ में शामिल होता

काश मैं पंछी होता
न घर की ई.एम.आई. की चिन्ता
न कार लोन का लफड़ा होता
न ए.सी .कूलर कि ख्वाइश करता
काश मैं पंछी होता

काश मैं पंछी होता
न स्वाभिमान कि इच्छा रखता
न अभिमान का ताज पहनता
न किसी जाति का होता
न किसी धर्म का होता
काश मैं पंछी होता
काश मैं पंछी होता

लेख

कोविड-**19**

विक्रम कुमार, टी.टी.टी. 'बी'

कोरोना वायरस का संक्रमण दिसम्बर 2019 में 'चीन' के बुहान में शुरू हुआ था । यह संक्रमण इतना खतरनाक है कि 'विश्व स्वास्थ्य संगठन ने महामारी घोषित कर दिया है। यह संक्रमण चीन से शुरू हो कर आज विश्व के लगभग सभी देशों में फैल गया। कोरोना वायरस बहुत सूक्ष्म लेकिन प्रभावी वायरस है। कारोना वायरस मानव के बाल की तुलना में 900 गुना छोटा है।

हमारे देश के अलावा आज विश्व के बड़ें देश जैसे अमेरिका, फ्ंरास, इटली, आस्ट्रेलिया आदि देशों में कोरोना वायरस के संक्रमण के कारण भयानक स्थिति हो गई है। आज के समय विश्व के सभी देशों की आर्थिक स्थिति पर भी बहुत बड़ा असर हुआ है। सभी देश आर्थिक मन्दी से गुजर रहे है।

कोरोना वायरस क्या है:-

कोरोना वायरस का सम्बन्ध वायरस के ऐसे परिवार से है जिसके संक्रमण से जुकाम से लेकर सांस लेने में तकलीफ जैसी समस्या हो सकती है। इस वायरस को पहले कभी नहीं देखा गया है। विश्व स्वास्थ संगठन के अनुसार बुखार, खांसी, सांस लेने में तकलीफ इसके मुख्य लक्षण है।

अब तक कोरोना वायरस को रोकने के लिए अर्थात् उपचार के ऐसी कोई औषधिन बनीं और ना ही कोई टीका उपलब्ध है। विश्व के सभी देश मिलकर कोरोना वायरस की वैक्सीन एवं औषधि खोज कर रहे है।

कोरोना वायरस इतना खतरनाक वायरस है कि ये हवा में फैलता है। कोरोना संक्रमित व्यक्ति के छींक या हाथ लगाने से भी यह संक्रमण दूसरे व्यक्तियों में बहुत तेजी से फैलता है। कोरोना वायरस चीन में उतनी तीव्र गति से नहीं फैला जितना की अन्य देशों में यह तीव्र गति से फैल गया है। अब तक दुनिया के 70 देशों में यह संक्रमण तीव्र गति से फैल गया है।

''सुरक्षा ही जीवन है''

कोरोना वायरस के लक्षण :

कोरोना वायरस में पहले बुखार होता है इसके बाद सूखी खांसी होती है और फिर एक हफ्ते बाद सांस लेने में परेशानी होती है। इन लक्षणों का हमेशा यह मतलब नहीं है कि हमें या आपको कोरोना हुआ है। कोरोना वायरस के गम्भीर मामलों में निमोनिया, सांस लेने में ज्यादा परेशानी, किडनी फेल होना और यहां तक की व्यक्ति मृत्यु तक हो जाती है। बुजुर्ग या जो लोग पहले से ही अस्थमा, मधुमेह या हदय रोग से ग्रस्त हैं उन व्यक्ति में संक्रमण तेजी से फैलता है जुकाम और फ्लू में वायरसों में भी इसी तरह के लक्षण पाए जाते है।

‘

कोरोना वायरस संक्रमण हो जाए तब

इस समय कोरोना वायरस का कोई स्थायी उपचार नहीं है, लेकिन इसमें बीमारी के लक्षण कम होने वाली दवाईयां दी जा सकती है। जब तक आप ठीक न हो जाए, तब तक आप दूसरे व्यक्तियों से अलग रहना चाहिए।

कोरोना वायरस के इलाज के लिए वैक्सीन विकसित करने हेतु शोध चल रहा है। इस साल के अन्त तक इंसानों पर इसका परीक्षण शुरू कर दिया जायेगा । कुछ अस्पताल एंटीवायरल दवा का भी परीक्षण कर रहे है।

इस संक्रमण के बढ़ते खतरे को देखते हुए सावधानी बरतने की जरूरत है, ताकि इसे फैलने से रोका जा सके।

कोरोना वायरस के संक्रमण से बचाव के उपाय

कोरोना वायरस के संक्रमण को रोकने एवं बचाव के लिए "स्वास्थय मंत्रालय ने दिशा निर्देश जारी किये हैं, जो निम्न हैं

1- हमें हाथों को साबुन यासैनिटाइज़र से धोना चाहिए

2-हमें एल्काहेल युक्त सैनेटाइजर का प्रयोग करना चाहिए

3- हमें खांसतें और छींकते समय नाक और मुंह पर रूमाल या टिश्यू रखना चाहिए

4- घर से बाहर निकलने पर हमें मास्क का प्रयोग करना चाहिए ।

5- हमें ज्यादा भीड़ वाले स्थानों पर जाने से बचना चाहिए।

6- हमें सार्वजनिक वाहन जैसे- बस, टैक्सी से यात्रा नही करनी चाहिए

7- घरों में बाहर से मेहमानों को नहीं बुलाना चाहिए न ही दूसरों के घरों में जाना चाहिए

8- घरेलू सामान लेने हुए सावधानी बरतनी चाहिए

9- सार्वजनिक स्थानों पर सोशल डिस्टेसिंग का पालन करना चाहिए

10- बाहर से आने पर कम से कम 14 दिन तक होम क्वारिंटीन रहना चाहिए ।

कोरोना वायरस संक्रमण से हमें बचाव करना चाहिए जब तक कोरोना वैक्सीन नही बन जाती है तब तक हमें स्वास्थ्य मंत्रालय के दिशा निर्देशों का पालन करना चाहिए क्योंकि बिना दवाईयों से संक्रमण मारा नहीं जा सकता परन्तु उपायों से हम बचाव अवश्यक कर सकते है।

लेख

वैश्विक महामारी कोरोना (कोविड 19)

अनिल कुमार, सर्वेक्षक,
उपग्रह ज्योडीय विंग

6 अगस्त के अमर उजाला में प्रकाशित "बिना संक्रमित हुए कोरोना के मौत मर गया एक गुमनाम व्यक्ति" लेख पढ़कर कौन होगा जिसका हृदय दहल ना गया हो, यह सच है कि अब तक भारत में लाखों लोग कोविड 19वायरस की चपेट में आ गये है और इस लेख को लिखने की तारीख 06 अगस्त 2020 तक करीब 40 हजार से अधिक लोगों की मृत्यु हो चुकी हैं लेकिन इस लेख को पढ़ने के बाद लगा कि कोरोना से मरने वाले नब्बे प्रतिशत लोग भारत के आम आदमी है- बेरोजगार, मजदूर, गरीबी रेखा से नीचे रहने जीने वाले असहाय ही है।

इस कोरोना काल में कोरोना के अतिरिक्त अन्य बीमारियों से ग्रस्त तथा कोरोना से मरने वालों की संख्या तो हर रोज टी.वी. और समाचार पत्रों के द्वारा मालूम हो जाती है, लेकिन इस कोरोना के भय के कारण अन्य बीमारियों से ग्रसित कितने ही गरीब आदमियों को मेडिकल सुविधाओं के आभाव में जीवन से हाथ धोना पड़ रहा है।

राजकीय अस्पतालों में जाते है तो उन्हें कोरोना के शक में भगा दिया जाता है और प्राईवेट अस्पतालों में जाते है तो अच्छी फीस देनी पड़ती है जिसमें असमर्थ गरीब को वहां से भी लौटना पड़ता है।

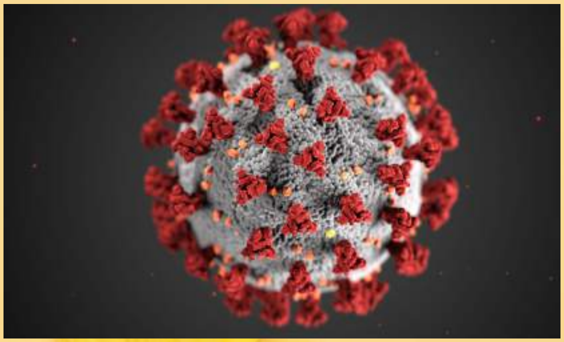

कभी-कभी यह भी सुनने में आता है कि हृदयघात जैसी भयंकर बीमारियों में भी तुरन्त उपचार इसलिए नहीं मिल पाता है कि कोरोना का संदेह सामने आकर पहले कोरोना पुष्टि में ही समय गंवा दिया जाता है और ऊपर वाले के हाथ मरीज को दूसरी दुनिया में खींच लेते है।

यह सच है कि कोरोना एक ऐसी बीमारी है जिससे दूरी बना कर ही बचा जा सकता है लेकिन अन्य बीमारियों से ग्रसित आम आदमी को कोरोना के भय से मौत के मुंह में धकेलना तो मानवता के विरुद्ध ही होगा

अतः इस कोरोना काल में सरकार को चाहिए कि सरकारी अस्पतालों की संख्या बढ़ायें जिसमें कोरोना के अलावा अन्य बीमारियों की चिकित्सा भी आसानी से हो पाए ।

अब रही बात बचने की तो कहा ये जा रहा है कि कोरोना टेस्ट का रिजल्ट तुरन्त उपलब्ध हो रहा है किन्तु आम आदमी को तो इतना भी नहीं पता होता है कि टेस्ट कहां पर कराया जाए। अतः सरकार की ओर से अधिक से अधिक कोरोना टेस्ट सेन्टर खोले जाए और इनकी जानकारी टी.वी.व समाचार पत्रों के माध्यमों के द्वारा प्रकाशित कर सर्वजन सुलभ बनाई जाए ।

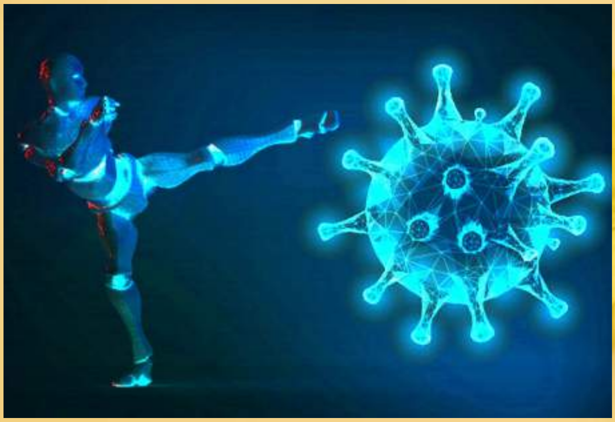

बिना कोरोना के लक्षणों वाला कोई भी व्यक्ति कम खर्चों में ही कोरोना टेस्ट करवा सके व सरकारी अथवा गैर सरकारी किसी भी अस्पताल में मरीज को कोरोना के सन्देह में आवश्यक उपचार से वंचित न रखा जाए ।

वैश्विक महामारी (कोविड-19) विकराल रूप धारण कर काल बन कर लाखों लोगों की मौत का सबब बन गई। लोगों को अपने शहर अपने ही घर में कैद होने पर मजबूर होना पड़ा, इससे पहले सौ वर्षों में भी लॉकडाउन जैसी परिस्थिति न देखी न सुनी एक महामारी जिसमें लाखों की मृत्यु के बाद भी इससे बचाव हेतु कोई वैक्सीन या दवा नहीं बन पाई है।

दुनिया के शक्तिशाली देशों को भी अब तक समझ में आ गया होगा कि जितना भी शक्ति प्रदर्शन कर लें बेवजह प्रकृति से छेड़छाड़ का नतीजा भयावह हो सकता है । शक्ति प्रदर्शन का रुख न करते हुए यदि वह प्रकृति का रुख करते और उसके सान्निध्य में रह कर उसका लाभ उठाते तो आज यूं ''करोना का रोना'' इतना वीभत्स और भयावह नहीं सुनाई पड़ता ।

और अन्त में हर व्यक्ति यह समझ लें कि जब तक इसको खत्म करने की वैक्सीन उपलब्ध ना हो जाए हर व्यक्ति इसके प्रति व समाज के प्रति व स्वंय के प्रति खुद जागरूक हो और इससे बचाव के लिये सरकार द्वारा बनाये गए नियमों का कढ़ाई से पालन करे। तभी इससे बचा जा सकता है और लापरवाही से इसके दूरगामी दुष्परिणाम होगें जो बहुत भयावह होगें।

परन्तु ड्रैगन जैसा चालबाज और ढीठ देश प्रकृति के खिलाफ अपनी मनमानी कर ऐसे दुष्परिणामों का ज्वलंत उदाहरण है जिससे आज सारा विश्व जूझ रहा है।

ऐसों के लिये ही मुहावरा है 'विनाश काले विपरीत बुद्धि' जिसका विनाश निश्चित है ऐसे में उसकी मति भी काम करना बंद कर देती है और वह विपरीत कार्य कर विनाश की ओर स्वंय तो बढ़ता ही है अपितु दूसरों को भी मुसीबत में डाल देता है।

आओ हम सब मिलकर वृक्षारोपण दिवस, पर्यावरण दिवस, स्वच्छता दिवस, योग दिवस, ऐसे कार्यक्रमों के प्रति जागरूक हो व इसे बढ़ावा दें। प्रकृति और योग संरक्षण के द्वारा ही जानलेवा महामारियों से बचा जा सकता है। अतः कोविड-19 महामारी जैसे हालातों में हर देश को गंभीरता से यह सोचना होगा कि युद्ध के हालत पैदा न करें। क्योंकि प्रकृति संरक्षण से ही मानव जीवन सम्भव है।

सबका साथ सबका विकास इस भावना की साथ ही हम सब एक बार फिर प्रकृति की ओर आओ बढ़ चलें ।

कविता
कोविड-19 . तू जरा ठहर तो सही

पायल आर्य,सर्वेक्षक

एक नई सुबह फिर से लौटेगी
एक खुला आसमां फिर से खिलेगा
तू जरा ठहर तो सही
जिन्दगी फिर से चल जायेगी
आजादी फिर से मिल जाएगी
तू जरा ठहर तो सही
हवा फिर से मुस्कुराएगी
धूप फिर से खिल जाएगी
तू जरा ठहर तो सही

उत्सव फिर से मनाएंगे
बाजार फिर से सजायेंगे
तू जरा ठहर तो सही
खेल कूद शुरू हो जाएगें
कारोबार भी चल जाएगें
तू जरा ठहर तो सही
मेलजोल सब हो जाएगें
बिछड़ें दोस्त भी मिल जाएगें
तू जरा ठहर तो सही

(यहां इस कविता में ठहर शब्द का प्रयोग धैर्य और सकारात्मकता के लिए किया गया है)

कविता
कौन अजनबी

पायल आर्य,सर्वेक्षक

न जाने कौन अजनबी आया है मेरे शहर में
आते ही जिसके सन्नाटा छा गया मेरे शहर में
खामोशी बिखर गई है सड़कों पर
और खौफ का मंजर है हर घर पर
न जाने किसकी नजर लग गई है मेरे देश को
अब कोई नहीं आता है मिलने किसी को
यह कैसा मंजर दिखने लगा है
कारवां भी अब अकेले चलने लगा है
वो प्यारी सी मुस्कुराहट कही खो सी गई है
वो खिलता चेहरा बुझने सा लगा है
दिन ब दिन डर अपनी जगह बनाता जा रहा है
सकारात्मकता पर मानो हावी होता जा रहा है
दे रहा है दस्तक वो हर दरवाजें पर
ताकाझांकी कर रहा है वो हर चैराहे पर
पर दोस्तों हम भी हिन्दुस्तानी है
हमने भी यह बात ठान ली है
इस अजनबी को हमें दूर भगाना है
देश को फिर से खुशनुमा बनाना है
नहीं खोलगें हम दरवाजे इसके स्वागत के लिए
नियमों का पालन करना है मानव जाति कें लिए
छट जाएगें यह काले बादल आज नहीं तो कल
है मन में यह विश्वास हर पल, हर पल

(इस कविता में अजनबी का अर्थ कोरोना से है)

संस्मरण
एक ड्राइवर ऐसा था

शिव सिंह रावत, अधीक्षक सर्वेक्षक,
प्रभारी अधिकारी, परियोजना सर्वेक्षण विंग

यह वृतान्त 2000-01 क्षेत्रीय वर्ष का है। मैं सर्वेक्षक के तौर पर दल संख्या 82 पार्टी से (वर्तमान में सैटेलाईट ज्योडेसी विंग) ज्योडीय एंव अनुसंधान शाखा से क्षेत्रीय कार्य के लिए ट्रांसफॉरमेशन पैरामीटर के क्षेत्रीय कार्य में श्री फूल सिंह, अधिकारी सर्वेक्षक (वर्तमान में सेवानिवृत्त) के अधीन में गया था। मेरे साथ तीन अन्य साथी सर्वेक्षक भी क्षेत्रीय कार्य में कार्यरत थे। हम चारों को शिविर अधिकारी श्री फूल सिंह द्वारा 24 घटें का प्रेक्षण अलग-अलग चांदों पर करना सौंपा गया था। हम महाराष्ट्र राज्य में कार्य करते हुये मध्य प्रदेश राज्य की ओर बढ़ रहे थे। मैं सरकारी वाहन टाटा-407 में अपनी स्कॉवयड के साथ जी. पी.एस. प्रेक्षण हेतु जा रहा था। सरकारी वाहन दिलावर सिंह, वाहन चालक चला रहे थे। बाकि अन्य स्कावयड (एमटीएस एवं कैम्प खलासी) सामान के साथ ट्रक के पीछे बैठे थे। हम प्रदेश राजमार्ग संख्या 10 पर वरूड शहर की ओर बढ़ रहे थे।वरूड शहर जिला-अमरावती, महाराष्ट्र में पड़ता है। वरूड शहर से लगभग 10 किमी पहले हमारी गाड़ी 70-80 की गति से चलायमान थी। मैने ड्राइवर से अनुरोध किया था कि गति कम कर लो ताकि नियंत्रण बना रहे। मैं भी सफर की थकान से अलसाई नजरों से दौड़ते ट्रक व पीछे छूटती हुई सड़क पर नजरें जमाये हुए था कि अचानक मैनें दूरी पर देखा कि चार-पांच बच्चे, जिनकी उम्र 6 वर्ष से 10 वर्ष के बीच थी, सड़क पार करने की चेष्टा में बीच सड़क में पहुंच गये। ड्राइवर ने अपनी गाड़ी धीमी कर दी और लगातार हार्न बजाने लगा।

जिसका फ़र्क पड़ा और सभी बच्चे झट से पीछे वापस चले गये। लेकिन उनमें से एक बच्चे के दिमाग में न जाने क्या आया कि अचानक लगभग भागते हुए सड़क पार करनी चाही।इस बीच हमारी गाड़ी भी करीब पहुंच चुकी थी और दुर्भाग्यवश वह बच्चा हमारी गाड़ी से टकरा गया।

ड्राइवर ने ब्रेक लगाकर वहीं पर गाड़ी रोक दी और मुझसे बोला ओफ-ओ साहब यह तो बहुत गलत हो गया। मैनें भी खुद को संभाला और ड्राइवर को समझाया कि आप गाड़ी के अन्दर ही रहना मैं स्थिति का मुआयना करके आता हूँ। मैं गाड़ी से नीचे उतरा और फिर और लोगों को भी नीचे उतरने को कहा। हमारे दल के सदस्य अमित भाटिया, एम.टी.एस. ने प्यार से बच्चे को गोद में उठाया और मुझसे कहा कि बच्चा ठीक है बस एक टांग में चोट लगी है। धीरे-धीरे वहां गांव, बस्ती के लोग इकठ्ठे होने शुरू हो गये। गांव वाले क्रोध मे ट्रक में आग लगाने को तैयार थे।

अचानक कुछ लोग ड्राइवर की केबिन की तरफ लपके और ड्राइवर को नीचे खीचकर हाथापाई शुरू कर दी। मैनें वहां भीड़ में मौजूद पढ़े-लिखे लोगों की पहचान कर उनको समझाया कि इस समय मारपीट व झगड़ा करने से बेहतर होगा कि हम बच्चे को अस्पताल ले जाये। इस पर वे तैयार हो गये। फिर एक एम टी एस को गाड़ी के साथ दुर्घटनास्थल पर छोड़कर हम सभी आटो द्वारा जिला अस्पताल, वरूड पहुंचे। वहां पर डॉक्टर ने बच्चे को एडमिट कर इलाज शुरू कर दिया। सूचना पाकर शिविर अधिकारी श्री फूल सिंह वरूड़ गेस्ट हाउस पहुंच गये। जहां पर मेरा अन्य साथी श्री पी.के. आर्य, सर्वेक्षक कैम्प कर रहा था। शिविर अधिकारी के निर्देश पर मैं ड्राइवर, बच्चे के अभिभावक व गांव वालों को लेकर गेस्ट हाउस पंहुचा।

कुछ बातचीत होने के बाद हम सभी फिर ग्राम सरपंच के यहां पहुंचे और आपस में वार्तालाप और आपसी समझौते से कुछ तय रकम नकदी के रूप में अदा करके अपना ट्रक छुड़वाया। इस समझौते से वे काफी संतुष्ट लग रहे थे और उन्होने आश्वासन दिया कि आगे कोई कानूनी कार्यवाही नहीं होगी। तत्पश्चात् हम सभी अपने-अपने प्रेक्षण कार्य में पूर्व की भांति लग गये। लेकिन करीब एक माह पश्चात् एक दिन महाराष्ट्र पुलिस ने हमारे ट्रक को रोककर ड्राइवर से कहा आपके खिलाफ पुलिस रिपोर्ट दर्ज है । चूंकि मामला सरकारी महकमें से सम्बन्धित था, सो पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर केस कोर्ट को हस्तान्तरित कर दिया। फिर क्षेत्रीय कार्य की समाप्ति के पश्चात् हमारी पूरी क्षेत्रीय टुकड़ी देहरादून मुख्यालय वापस आ गई। शुरू में कोर्ट के आदेश के अन्तर्गत एक दो पेशी में दिलावर सिंह स्वयं गये। लेकिन धीर-धीरे उनका स्वास्थय गिरता रहा। फिर अन्य पेशी में श्री एल.एम.शर्मा, सर्वेक्षक (सेवानिवृत्त), श्री महेन्द्र सिंह, (वरिष्ठ अधिकारी सर्वेक्षक) जाते रहे।

दयालू प्रवृत्ति के दिलावर सिंह, आत्मग्लानि वश टूटते रहे और अलबत्ता एक दिन दिलावर सिंह का देहान्त हो गया। नियति का खेल देखो दिलावर सिंह की मृत्यु की अगली पेशी में ही दिलावर सिंह केस जीत गये लेकिन यह जीत देखने के लिए वह दुनिया में नहीं थे। वह जिन्दगी से तो हार गये थे लेकिन वास्तव में वह हार कर भी जीत गये थे।
फिर करूणामूलक आधार पर विभाग ने उनके बेटे को खलासी के रूप में नौकरी दी। उनका नाम श्री मनिन्दर सिंह है वर्तमान में वह एस.जी.ओ. में यू.डी.सी. है।
स्व. दिलावर सिंह जी को विभाग व हम सभी की तरफ से हार्दिक श्रद्धांजलि और अन्त में मैं कहना चाहूगां कि इसी को कहते है-

"हार कर भी जीत जाना"

लेख

जियोइड: एक परिचय

भास्कर शर्मा,
अधिकारी सर्वेक्षक,भू-भौतिकीय विंग

पृथ्वी के सटीक आंकड़ें और इसके निर्धारण एवं महत्व से सम्बन्धित विज्ञान को भूगणित (Geodesy) के रूप में जाना जाता है। यदि पृथ्वी एक पूर्ण गोले जैसी होती, तो गहराईयों और दूरियों की गणना आसान होती, क्योंकि हम एक गोले पर उन गणनाओं के समीकरणों को जानते है। वास्तव में पृथ्वी एक दीर्घवृत्त (Ellipsoid) जैसी लगती है या यह भी कहा जा सकता है कि यह एक अनियमित आकार की गेंद जैसी दिखती है।दीर्घवृत्त की गणना गोलाकार गणनाओं जितनी आसान नहीं है लेकिन अब विज्ञान इनकी गणना अच्छी तरह से करने में सक्षम है।

हम सभी यह भी जानते है कि पृथ्वी वास्तव में एक दीर्घवृत्त भी नहीं है क्योंकि पृथ्वी पर महासागर, पहाड़ और घाटियां है और कई अन्य विशेषताएं है जो एक आदर्श दीर्घवृत्त का हिस्सा नहीं है।

जियोइड एक काल्पनिक समुद्र तल सतह की तरह है जो कि पृथ्वी के आकार जैसा होता है। यह महासागरों के ऊपर समुद्र के स्तर के साथ मेल खाता है और महाद्वीपीय क्षेत्रों में यह एक संदर्भ सतह के रूप में कार्य करता है जहां के स्थलाकृतिक ऊंचाइयों और समुद्र की गहराई को मापा जाता है। अतः जियोइड का निर्धारण करना काफी महत्वपूर्ण हो जाता है। हम दीर्घवृत्त और जियोइड के बीच सम्बन्ध की गणना कर सकते है। अर्थात हम इसकी सहायता से पृथ्वी के वास्तविक आकार की गणना कर सकते है।

भारतीय सर्वेक्षण विभाग की ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा देशव्यापी जियोडेटिक सर्वेक्षण का कार्य करती है, जो राष्ट्रीय और स्थानीय परियोजनाओं की योजना बनाने उनके निष्पादन करने के लिए आवश्यक है। जहां गहन विकास हो रहा है वहां जियोडेटिक सर्वेक्षणों की आवश्यकता सबसे महत्वपूर्ण है। क्षैतिज ऊध्र्वाधर और गुरूत्वाकर्षण मानों वाले कंट्रोल बिंदुओं की रूपरेखा राष्ट्रीय स्तर पर सर्वेक्षण और मानचित्रण की पहली और महत्वपूर्ण आवश्यकता है। ये सर्वेक्षण एक सुसंगत उत्पाद सुनिश्चित करने के लिए सभी सर्वेक्षण और मानचित्रण कार्यों के लिए सामान्य आधार प्रदान करते है। नेशनल जियोडेटिक कंट्रोल नेटवर्क को बनाने और बनाए रखने की जिम्मेदारी भारतीय सर्वेक्षण विभाग की ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा को दी गई है।

किसी बिंदु के ऊध्र्व निर्देशांक अक्ष (Vertical Reference frame) को सन्दर्भ सतह (जियोइड) और ऊंचाई से परिभाषित किया गया है। यदि संदर्भ सतह और ऊंचाई पृथ्वी के गुरूत्वाकर्षण क्षेत्र पर निर्भर करती है तो ऐसी प्रणाली को भौतिक ऊंचाई प्रणाली(Physical Height System) कहा जाता है। यदि यह गुरूत्वाकर्षण से सम्बन्धित नहीं है तो यह ज्यामितीय ऊंचाई प्रणाली (Geometric Height System) है। उच्च तलेक्षण और गुरूत्वाकर्षण माप से प्राप्त नार्मल और ओर्थोमेट्रिक ऊंचाईयां भौतिक ऊंचाई प्रणाली है। भारत और दुनिया के अधिकाशं देशों में संदर्भ सतह जियोइड को समुद्र के स्तर से परिभाषित किया जाता है जिसके सापेक्ष में ऊंचाईयों का निर्धारण किया जाता है।

ग्लोबल नेविगेशन सैटेलाईट सिस्टम (GNSS) आधारित तकनीक ने सर्वेक्षण और मानचित्रण की अवधारणा और अभ्यास में क्रांति ला दी है। यह क्रांति केवल सर्वेक्षण करने वाले समुदाय तक ही सीमित नहीं है, बल्कि मानचित्रण नेविगेशन और भौगोलिक सूचना प्रणाली (GIS) के क्षेत्रों में भी विस्तारित हो गई है। पिछले कुछ वर्षों के दौरान हमने ग्लोबल नेविगेशन सैटेलाईट सिस्टम प्रणाली को व्यापक रूप से अपनाया है। इन प्रेक्षण में सटीक ऊंचाईयों की आवश्यकता होती है। भारत में राष्ट्रव्यापी जियोइड की गणना एक लम्बे समय से पहले की गई थी जो एवरेस्ट एलीपोसिइड के नाम से खगोलिय प्रेक्षणों पर आधारित थी। जहां तक ओर्थोमेट्रिक ऊंचाई के लिए ग्लोबल नेविगेशन सैटेलाईट सिस्टम प्रणाली समाधानों का सम्बन्ध है,खगोलीय जियोइड की विभिन्न सीमाएं है

और इनका आज कोई महत्व नहीं है। पिछले कुछ दशकों के दौरान विशेष रूप से ग्लोबल नेविगेशन सैटेलाईट सिस्टम की शुरूआत के बाद एक उच्च रिजॉल्यूशन वाले जियोइड मॉडल की मांग काफी बढ़ गई है क्योंकि यह उच्च विशुद्ध तलेक्षण कार्य में लगने वाले श्रम और समय को कम करने में भी मदद करता है।

जियोइड मॉडल से संबंधित गुरूत्वीय प्रेक्षण का कार्य

पृथ्वी के दीर्घवृत्तीय परिकल्पना के आधार पर संगणित ऊंचाईयों को एलीपोसिइडल हाइट्स (**h**) के रूप में जाना जाता है। जी एन एस एस द्वारा प्राप्त एलीपोसिइडल ऊंचाईयों से आर्थोमेट्रिक हाईटस (**H**) प्राप्त करने के लिए जियोइडल अंडयूलेशन (**N**) के मूल्यांकन की आवश्यकता होती है। इन तीनों के बीच सम्बन्ध निम्नलिखित समीकरण द्वारा प्रदर्शित किया जाता है।

$$h=H-N$$

जी.एन.एस.एस. तकनीक से प्राप्त एलीपोसिइडल ऊंचाईयों को आर्थोमेट्रिक ऊंचाई में बदलने के कार्य ने दुनिया भर के भूविज्ञानियों को जियॉइडल अंडयूलेशन (**N**) का निर्धारण करने के लिए प्रेरित किया है।

भारतीय सर्वेक्षण विभाग की ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा ने भारत के लिए हाई रेजोल्यूशन जियोइड मॉडल के विकास का महत्वपूर्ण कार्य किया है। हाल ही में भारतीय सर्वेक्षण विभाग ने नेशनल हाईड्रलोजी प्राजेक्ट, नमामि गंगा और स्वाम्वि जैसी परियोजनाओं में भी कार्य किया है, यह मॉडल आगे होने वाली सभी परियोजनाओं में भी अपनी उपयोगी भूमिका निभाता रहेगा।

कविता

शिखा उनियाल, सर्वेक्षक

जिंदा है तू, इस बात का प्रमाण दे तू

जब अपने कहीं बहुत दूर चले जाते है
सच नहीं,सपना है यह, बस यूं ही दिल को बहलाते है ।
जीवन मरण जिन्दगी के दो छोर है
चंद सांसे जैसे बांधे एक डोर है
कल तक थी जो सुंदर सी काया
जाना आज कि वह सिर्फ थी एक माया
कभी बच्चे की किलकारियों से भर जाता है घर
तो कभी मृत्यु के क्रंदन से कांप उठता पूरा शहर
हर्षोल्लास से नवजीवन का अभिनंदन हम करते है
तो कभी भारी मन से शरीरांत को अलविदा करते है
जीवन मरण जिन्दगी के दो छोर है
चंद सांसे जैसे बांधे एक डोर है
तो उठ जब तक यह सांसे जिन्दा है तुझमें
कर लें पूरी हर वो ख्वाहिश जो दफन है तुझमें
जब तक है सांसे तुझमें, न रूक, न ठहर, न स्थिर हो तू,
जिंदा है इस बात का प्रमाण दे तू
कभी अपने लिए, तो कभी अपनो के लिए जियो तुम,
तुम खुद भी जरूरी हो और तू जिनसे हो, वो भी अहम है।
जब तक है चंद सांसे, लड़ हर एक बुराई से
कर हर मुमकिन प्रयास, अपने व अपनों के उद्धार के लिए
छोटे से जीवन में परेशानियों से न हार मान तू
हंसते हुए हर पत्थर रूपी बाधा को डटकर पार कर तू
कितना लम्बा जीवन जिया, यह मायने नहीं रखता
कितने जीवन में आशा-रूपी प्रकाश था तू, बस इसी का वो हिसाब रखता
कर कुछ ऐसा कि जिन्दगी भर के लिए छाप छोड़ दे तू
मरकर भी जो ना मरे, ऐसा अमर इंसान बन तू
अच्छाई और विनम्रता का अद्भुत उदाहरण बन तू
हर एक जीव   जो तुझसे जुड़ा है उसको रोशन कर तू
हो प्रकाश कुछ ऐसा तेरे कर्मों का कि अंधकार में भी चमकता तेरा ही नाम रहे ।
न धन, न दौलत, न मोटर, न गाड़ी, न यश, न अपयश
संग अपने तू बस अच्छाई अपनी ले जाएगा
तो जब तक है सांसें तुझमें, न रूक, न ठहर, न स्थिर हो तू
जिन्दा है तू, इस बात का प्रमाण दे तू जिन्दा है तू, इस बात का प्रमाण दे तू

नरेश सिंह, सन्तोषी,
सर्वेक्षण सहायक,तकनीकी अनुभाग

गंगा

गंगा की बात क्या करू गंगा उदास है
वह जूझ रही है खुद से और बदहवास है
न अब वह रंगरूप है न वह मिठास है
गंगाजली का जल नहीं, अब गंगा के पास है
बांधों के जाल में कहीं, कहीं नहरों के जाल में सिर पीट-
पीट कर रो रही, शहरों के जाल में
नाले सता रहे है, पतनाले सता रहे
खा-खा के पान थूकने वाले सता रहे
असहाय है, लाचार है, मजबूर है गंगा
अब हैसियत से अपनी बहुत दूर है गंगा
आई थी बड़ें शौक से, यह घर छोड़कर
विष्णु को छोड़कर कि शंकर को छोड़कर ।।
खोई थी अपने आप में वो कैसी घड़ी थी,
सुनते ही भागीरथ की तरफ दौड़ पड़ी थी
गं्गा की बात क्या कंरू, गंगा उदास है,
वह जूझ रही खुद से और बदहवास है।
मुक्ति का द्वार तो हमेशा खुला है
काशी गवाह है कि यहां सत्य तुला है
केवल नदी नहीं है, संस्कार है गंगा
धर्म जाति देश का, श्रृंगार है गंगा
गं्गा की बात क्या करू गंगा उदास है
जो कुछ भी आज हो रहा, गंगा के साथ है
क्या आप को पता नहीं कि किस किसका हाथ है
गंगा की बात क्या करू गंगा उदास है
देखे तो आज क्या हुआ गंगा का हाल है
रहना मुहाल इसका, जीना मुहाल है
गंगा के पास दर्द है, लेकिन आवाज नहीं है
मुंह खोलने का कुल में, रिवाज नहीं है
गंगा नहीं रहेगी यही हाल रहा तो
कब तक यहां बहेगी, यही हाल रहा तो
सन्तोषी जी का कहना कुछ कीजिए उपाय
प्रदूषण भगा कर मेरे भाई दियो गंगा को बचा

दुर्गम स्थानों पर सर्वेक्षण कार्य

जे.एस.ओबेरॉय, अधिकारी सर्वेक्षक
(उत्तराखण्ड जी डी सी)

भारतीय सर्वेक्षण विभाग की तरफ से सर्वे के लिये अलग-अलग क्षेत्रों में जाना होता है। कई बार इन कार्यों के लिये की गई यात्रायें बड़ी रोचक व मजेदार होतीं हैं और कभी-कभी ऐसी घटनाओं से सामना हो जाता है जिसे जीवन पर्यन्त भुलाना असम्भव हो जाता है। ऐसा ही यह एक संस्मरण है ।

एक बार हम लोग हिमाचल प्रदेश में विभाग की तरफ से अपने दल के साथ चुम्बकीय प्रेषण हेतु जा रहे थे। लम्बी यात्रा, कच्ची पक्की सड़कें और टेढ़े मेढ़े घुमावदार रास्तें होने की वजह से शरीर तो थकावट महसूस कर रहा था पर दूसरी ओर वहां की प्यारी हरी भरी वादियां की घुमावदार सड़क कभी किसी पर्वत से नीचे उतरती तो लगता जैसे नीचे बहती नदी को छूने जा रही है। फिर नदी के पास पहुंच कर, पुल पार कर सड़क दूसरे पर्वत पर चढ़ कर आसमान में उड़ रहे बादलों को पकड़ने के लिये चल पड़ती है। हम भी साथ-साथ उन बादलों से मिलने उन राहों के सचे हमराही की तरह चल दिये। पर वाहन खराब हो जाने की वजह से आगे बढ़ने में असमर्थ हो गये। सबने मिलकर वाहन को किनारे किया जिससे यातायात बाधित न हो। दल के अन्य सदस्यों को आवश्यक दिशा-निर्देश देकर मैं सुनसान सड़क पर ड्राईवर के साथ पास के गांव में मैकेनिक की खोज में पदैल ही चल पड़ा।

सर्पीली सुनसान व अनजान राह पर हम थोड़ा ही आगे बढ़े थे कि मोटर साइकिल की आवाज सुनाई पड़ी। मोड़ काट कर आगे बढ़े, तो देखा एक व्यक्ति परिवार सहित मोटर साईकिल पर आता दिखाई दिया। उनसे जानकारी प्राप्त करने के लिए उन्हें रोका अपना परिचय देकर जब बातचीत प्रारम्भ हुई तो पता चला कि वो सज्जन फौज से रिटायर हुये है और नौकरी के दौरान देहरादून में काफी समय रहे थे। फौज और सर्वे का चोली दामन का साथ है और हमारे नक्शों के ही आधार पर ही हम फौजी सीमा पर कार्य कर पाते है और आगे बढ़ पातें हैं। उनसे मिलकर लगा कि परदेश की अनजान राहों में मानो कोई अपना मिल गया हो। परिवार व बच्चों को घर छोड़कर वे कुछ ही समय मेही वापिस आ गये और हमें मोटर साइकिल द्वारा पास के गांव में मैकेनिक के पास ले गये। शाम होने वाली थी और ठंड बढ़ रही थी इसलिये मैं मैकेनिक के साथ चलने में इच्छुक नहीं था पर फौजी भाई के समझाने पर साथ चलने को तैयार हो गया ।

मैकेनिक अपनी मोटर साइकिल पर ड्राईवर को बिठा कर व जरूरी औजार लेकर वाहन की तरफ चल दिया। फौजी भाई ने बहुत कहा परन्तु मैं उन्हें और कष्ट नहीं देना चाहता था। अतः बस की इन्तजार करने लगा। इन्सानियत और विभाग के साथ फौजी भाई का इतना प्यार किउन्होने जिद पकड़ ली 'बस में बिठा कर ही घर जाऊंगा' ।

थोड़ी देर में ही बस आ गयी और मैं भी वाहन के पास पहुंच गया। शाम ढलने लगी थी इस लिये साथियों ने कैम्प लगा दिया था। मुझे उतार कर "बस" अन्य सवारियों को साथ लेकर अपने अगले "पड़ाव" की ओर चल दी ।

वह बस सर्पीली सड़क पर करीब आधा किमी ही गई होगी कि अचानक जोर की आवाज गूंजी। वाहन की तरफ जाते हुये मेरे पांव थम गये।मैं आवाज की दिशा में घूमा और उधर नजर गई तो वह बस सड़क से लुढ़क कर नीचे खाई की ओर गिरती दिखाई दी। फिर उसमें एक विस्फोट हुआ और नीचे बह रही नदी में समा गई और साथ ही थोडी देर पहले वाले मेरे सहयात्रियों को अपने साथ ले गई।

हम सब हतप्रभ और सुन्न खड़ें रह गये । कुछ ही पलों में घटित हुआ दिल दहला देने वाला ऐसा भयानक दृश्य देख सब कांप कर रह गये। उसके बाद फिर जैसे सब शान्त हो गया मगर यह शान्ति मन को व्यथित कर रही थी। मैकेनिक ने गाड़ी को ठीक कर दिया था। शाम अब रात में परिवर्तित हो रही थी। जो वादियां दिन में दिल को लुभा रही थी अब खतरनाक दिखने लगी थी। पूरी टीम की मनोस्थिति भांपते हुये आगे न बढ़ने व वहीं कैम्प लगाने का निर्णय लिया। ठंड थी पर महसूस नहीं हो रही थी। भूखे थे पर भूख नहीं लग रही थी। थकेहारे थे पर नींद नहीं आ रही थी। सड़क किनारे छोटे से मैदान में कैम्प लग चुका था बैचेनी अपनी चरमसीमा पर थी।

आखों से नींद जैसे उड़ चुकी थी। बार-बार वह भयानक दृश्य आंखों के आगे आ रहा था। 'काटो तो खून नहीं' की स्थिति में बिना करवट बदलते बदलते रात बीती। और सुबह उठ कर प्रभु का नाम लेते हुये आगे चल पड़ें और उस स्थान पर पहुंचे तो गाड़ी रोक नीचे उतर कर 'उन' सहयात्रियोंका श्रृद्धापूर्वक व नम आखों से याद कर भगवान को नमन किया। इन यात्रियों का साथ कुछ पलों का ही था-मैकेनिक की दुकान से कैम्प तक।लेकिन महसूस ऐसा हो रहा था मानों कितना लंबा समय गुजारा था।उनकी आत्मा की शान्ति की प्रार्थना कर भारी मन से हम अपने कार्य पर आगे बढ़ चले। आज जब भी समाचारों में पहाड़ी रास्तों कोई दुर्घटनायें आतीं हैं मुझे वह दुर्घटना और वे सहयात्री याद आ जातें हैं। सचमुच पहाड़ी जीवन बहुत संकट पूर्ण है।

हर इन्सान सोने से पहले

देवेन्द्र पाल सिंह माटा 'कोमल',
अधिकारी सर्वेक्षक (सेवानिवृत्त)

अक्सर गुजरे जमाने के यादगार लम्हें
शयन शैया पर करवटें लेते
मस्तिष्क के अदृश्य परदे पर
फिल्म की मानिंद बिना टिकट हर रोज देखता है ।
वह अकेला नहीं होता
उसकी वफा तन्हाई भी अक्सर साथ रहती है
फिल्म के प्रत्येक दृश्यों पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करती है।
बचपन से आज तक कितने अजनबी लोगों से मिले
वह सभी चेहरे तेजी से गुजरते दृश्यों के मध्य
यादों के कोहरे की धुंध में तैरते नजर आयेगें ।
कितनों से सम्बन्ध बने, अचानक यूं ही मुस्कराते
दुनिया ने दिन के उजालों में अक्सर परवान चढ़ते देखा
फिर खामोश आंधियों की भेंट चुपचाप चढ़ गये
जिन्हें तुमने रातों की तन्हाईयों में गर्म आंसुओं की
ठंडी सिसकियों में अकेले ही तड़पते देखा।
कितने लोगों से वफा और तुमने की बेवफाई
अपनी जहरीली मुस्कराहटों के जाम
जीवन भर अक्सर दलालों के बीच छलकाते रहे
फिर भी रांझे की हीर कहलाते रहे ।
दोस्ती की आड़ में दोस्तों की जड़ें कटवाते रहे
लूट की दौलत अक्सर छिपाते रहे
फिर भी भरी सभाओं में दानवीर कर्ण कहलाते रहे
कितने लोगों को गुमराह किया मूर्ख बनाया, ठोकरे मारी
फिर भी अपने स्वार्थ की खातिर ठहाके मार मुस्कराते रहे
अपने सिर पर धोखेबाजी का काला ताज पहनकर
मन ही मन इतराते रहे
रात भर मानसिक झंझावतों के मध्य
अपने दुश्मनों को छकाने की हर मुमकिन
खतरनाक योजनाएं बनाते रहे
पर सवेरे होने तक खुद को षड़यन्त्रों के भंवर में फंसा पाता रहे
जीवन भर ईमानदारी योग्यता, सभ्यता और शराफत को
गले लगाते रहे, ठोकरें खाते रहे, मुस्कराते रहे
'कोमल' फिर भी रात भर परमात्मा को
बन्दा नवाज का बन्दनवार पहनाते रहे ।

यात्रा वृतांत

एक यात्रा, हिंदी के पहले डि लिट के गाँव की

अरुण कुमार , अधिकारी सर्वेक्षक
प्रभारी पुस्तकालय/संग्रहालय

बीस साल पुरानी बात है। दफ़्तर में एक बड़े बाबू थे, मस्तान सिंह रावत। वे बड़े अध्ययनशील व्यक्ति थे और मुझे भी ऐसा जानकर मेरा बहुत सम्मान करते थे। मैं उन्हे 'बड़े बाबू' कहा करता था और वे मुझे 'अरुण बाबू' । एक दिन उन्होने मुझसे हिन्दी के पहले डि लिट करने वाले विद्वान का नाम बताने को कहा तो मेंने तपाक से चन्द्रकुंवर बड़थ्याल नाम बोल दिया था। दरअसल तब मैंने 'बत्र्वाल' और 'बड़थ्वाल' का अंतर समझने में चूक कर दी थी। चन्द्रकुंवर बत्र्वाल की रचनाएं यत्र तत्र प्रकाशित होती रहती थी और यदा कदा उन पर कोई लेख भी पढ़ने को मिल जाता था।

ज़ेहन में उन्ही का नाम रहता था। इस वज़ह से ही यह चूक हो गई थी। तब बड़े बाबू मस्तान सिंह रावत ने इस फ़र्क को अच्छी तरह समझाया और उनके जन्मस्थली पाली गांव के बारे में भी अच्छी खासी जानकारी दी। उसके बाद से ही मैं पीतांबर दत्त बड़थ्वाल जी के बारे में कुछ भी और जानने को इच्छुक हो गया था। लेकिन चन्द्रकुंवर बत्र्वाल की रचनाओं को प्रकाश में लाने का बीड़ा जिस प्रकार से योगंबर सिंह बत्र्वाल ने उठाया है, ऐसी ज़िम्मेदारी पीतांबरदत्त बड़थ्वाल के संबंध में लेने वाला व्यक्ति आगे नहीं आया है जबकि उनका रचना संसार काफी विशाल है। इसमें भी सबसे महत्वपूर्ण काम निबंध विधा में है, जिसमें कबीर और उनका साहित्य केन्द्र में है। उनकी डि लिट भी निर्गुण साहित्य में है।

हाँलाकि देहरादून स्थित पीतांबर दत्त हिंदी अकादमी ने उनकी रचनाओं को छः खण्डों में प्रकाशित किया है लेकिन इनके मूल्य इतने अधिक हैं कि आम पाठक शायद ही इन्हे खरीदने को सोच सके। रचना संसार की यात्रा के साथ साथ उनके पैतृक गाँव पाली जाने की इच्छा भी थी जो फलवती होने के लिये अनुकूल समय की प्रतीक्षा में थी। युगवाणी के जनवरी 2019 अंक में पंकज शर्मा का पीतांबर दत्त बड़थ्वाल के जन्मस्थान के बारे में एक छोटा लेख प्रकाशित हुआ था। इस लेख को पढ़ कर मैं पाली जाने को व्याग्र हो गया और देहरादून स्थित पीतांबर दत्त बड़थ्वाल हिन्दी अकादमी से कुछ जानकारियां एकत्र कर सपरिवार हो

पीतांबर दत्त बड़थ्वाल

वह घर जहाँ पीतांबर जीने अपने जीवन के अंतिम वर्ष बिताये

गया। किसी के पास अपना वाहन हो या न, अगर मन में जाने की इच्छा है, तो पाली जाना मुश्किल नहीं। देहरादून से कोटद्वार और कोटद्वार से पौड़ी के लिये निरंतर बस सेवा है। बस के अतिरिक्त टेम्पों, सूमो जैसे अन्य मध्यम श्रेणी के वाहन भी इस मार्ग पर खूब निकलतें हैं। पाली गांव, कोटद्वार-पौड़ी मार्ग पर दुगड्डा से पन्द्रह किमी आगे स्थित है। मुख्य मार्ग पर ही पीतांबर दत्त बड़थ्वाल के नाम से प्रवेशद्वार बना हुआ है जहां से पाली गांव को कच्चा रास्ता जाता है। प्रवेशद्वार के आसपास ही, मुख्यमार्ग पर दो एक होटल भी हैं, जहां किफ़ायती दर पर कमरे मिल जायेगें। हम लोग 20 अप्रैल 2019 को सुबह आठ बजे रवाना हुये थे और चार घन्टें में वहां पहुँच गये । हम पाली गांव जाने को इतना बेताब थे कि सड़क किनारे स्थित इन्ही होटलों में से एक में अपना सामान रख कर प्रवेशद्वार की ओर निकल पड़े।

प्रवेशद्वार से पाली गाँव की दूरी लगभग डेढ़ किलोमीटर की है और पैदल पैदल आराम से जाया जा सकता है। हम गाँव वालों से पूछते पूछते , उस घर के पास जा पहुँचे , जिसमें पीतांबर जी ने अपने जीवन के अंतिम वर्ष बिताये थे। वहाँ पर हमारी मुलाकात दिनकर बड़थ्वाल जी से हुई। उनके पिता सतीश चंद्र बड़थ्वाल का पीतांबर दत्त बड़थ्वाल जी के परिवार से घनिष्ठ संबंध है। यूँ तो गाँव के सभी घर एक पारिवारिक डोर से बंधे रहतें हैं। लेकिन पीतांबर दत्त बड़थ्वाल जी के जिस घर के सामने हम लोग खड़े थे, उसकी देखरेख की जिम्मेदारी सतीश चंद्र जी ही निभातें हैं। पीतांबर जी की पुत्रियों से, जो दिल्ली-देहरादून रहतीं हैं, उनका संपर्क बना हुआ है और उनके अनुरोध पर आवश्कतानुसार घर में मरम्मत कार्य करवाते रहतें हैं। इस घर की चाभी भी उन्ही के पास रहती है और अपने पुत्र दिनकर के हाथ चाभी भिजवा दी थी। दिनकर जी ने घर का ताला खोला और हमने गर्व से हिंदी के प्रथम डि लिट के घर में प्रवेश किया। यह घर दो मंजिला है और पारंपरिक पहाड़ी शैली में बना हुआ है। घर में दैनिक उपयोग के कुछ सामान बर्तन, कुर्सी, मेज आदि रखे हुये थे। इनमें से कौन से सामान पीतांबर जी के समय का है , यह जानकारी उनके परिवार का सदस्य ही बता सकता है। ऐसे सामानों की एक सूची तैयार करके सुरक्षित रखवा देनी चाहिये। यह घर गाँव की बाहरी सीमा पर स्थित है।

जिस घर में पीतांबर जी का जन्म हुआ और बचपन बीता गाँव के भीतर स्थित है। इस बाहर वाले मकान को उन्होने इस उद्देश्य से बनाया था कि हिंदी साहित्य के विद्वान, लेखक आदि इसमें रहकर हिंदी साहित्य की उतकृष्ट कृतियों का सृजन कर सकें। वास्तव में यहाँ का प्राकृतिक सौन्दर्य , छायावाद के दौर में बहुत से रचनाकारों को सृजन के लिये प्रेरित कर सकता था। इस घर के एक भाग में संग्रहालय बनाने की भी उनकी इच्छा थी। लेकिन उनकी योजनायें फलीभूत होतीं कि उनका आकस्मिक निधन हो गया। अब सरकार को इस ओर ध्यान देना चाहिये। दिगंबर जी ने बताया कि 13 दिसंबर 2018 को पीतांबर दत्त बडथ्वाल जी की जयंती पर , पाली गाँव में एक बड़ा साहित्यिक आयोजन हुआ था जिसमें देहरादून और आसपास के साहित्यकारों ने भागीदारी की थी। उस वक्त इस जगह को विकसित करने के लिये सरकार पर दबाव बनाने की सहमति बनी थी। दिगंबर जी के आग्रह पर हम उनसे पिता से मिलने चल दिये।

सतीश चन्द्र जी के साथ उस घर के सामने जहाँ पीतांबर जी का जन्म हुआ

वह घर जहाँ पीतांबर जी का बाल्यकाल व्यतीत हुआ

उनके पिता सतीश चंद्र जी, उत्तराखंड राज्य के सेवावृित्त कर्मचारी हैं। उनका जन्म पीतांबर जी के मृत्यु के तीन वर्ष बाद हुआ था। उनके पास पीतांबर दत्त जी की स्मृतियां नहीं है। लेकिन उन्होन बताया कि पीतांबर बड़थ्वाल की आकस्मिक मृत्यु के पश्चात घर परिवार की जिम्मेदारी उनकी पत्नी पर आ गई थी। उन्होने यह भी जानकारी दी कि उस वक्त तक पीतांबर ज कि साहित्यिक योगदान का मूल्यांकन नहीं हुआ था। उनकी अधिकांश रचनायें उनकी मृत्यु के काफी समय बाद प्रकाशित हुई। उत्तराखंड बनने के पश्चात, उनके नाम पर बनी हिंदी अकादमी ने उनकी रचनाओं को संकलित कर प्रकाश में लाने का सराहनीय कार्य किया है। सतीश चन्द्र बड़थ्वाल जी से पाली गाँव माली हालात के बारे में भी जानकारी मिली। इस गाँव में साठ सत्तर घर हैं, लेकिन दस बारह घरों में ही बसावट है। दूसरे शब्दों में , पलायन की समस्या से यह गाँव भी अछूता नहीं है। उनका कहना था कि पलायन के लिये गाँव वालों को दोष देना उचित नहीं है। उन्होने अपना ही उदाहरण दिया। अपने सेवाकाल का अधिकांश हिस्सा उन्होने अपने गाँव से दूर बिताया था। जिसमें एक बड़ा भाग देहरादून में व्यतीत किया गया था। परिवार के सदस्य देहरादून में एक घर बनाने की जिद कर रहे थे। लेकिन उन्होने सेवानिवृत्त के पश्चात

प्राप्त सारे धन को गाँव में लगाने का फैसला कर लिया था। उन्होने अपने पुश्तैनी घर का जीर्णोद्धार किया। घर के पास कीनू, आडू आदि फलदार वृक्षों का बाग लगाया, कुछ गायें खरीदीं और खेतों को व्यवस्थित किया। अब, जब पेड़ फल देने लायक हुये तो फल पकते ही सबसे पहले बंदर धावा बोल देते हैं। उन्होने बताया कि दिल्ली तथा अन्य मैदानी भागों से बंदरों को पकड़ कर पहाड़ों पर छोड़ दिया जा रहा है। जिससे यहाँ पर बंदरों की आबादी बहुत बढ़ गई है। गोपालन के संबंध में उन्होने एक लोमहर्षक वृतांत सुनाया। एक शाम उनकी एक गाय चर कर वापस घर नहीं आई। रात में भी नहीं आई। सुबह होते ही वह अपनी गाय की तलाश में निकल पड़े। घर से कुछ दूर चलने पर ही उनके कदम ठिठक गये। वहाँ से कुछ ही दूरी पर एक बाघ ने उनकी गाय को मार दिया था और अब उसे वह खा रहा था। वे दबे पांव वहाँ से लौट आये। पहाड़ी जीवन की दुश्वारियों का कोई अंत नहीं है।

उन्होने आगे बताया कि कुछ माह दिल का दौरा पड़ा था। कोटद्वार से एंबुलेस आने में दो तीन घंटे लग गये थे। देर शाम तक ही देहरादून पहुँच पाये थे । वह अपने को किस्मतवाला मानते हैं कि वह बच गये। लेकिन सबके साथ ऐसा नहीं हो पाता। इस तरह से, पहाड़ी जीवन के जो दुख या संकट है उनसे हिन्दी के पहले डिलिट का गाँव भी अछूता नहीं है। सतीश चंद्र जी पाली गाँव की परिक्रमा लगवाते हुये हमें उस घर के सामने ले गये जहाँ पीतांबर दत्त बड़थ्वाल जी का बचपन बीता था। पीतांबर जी के बाल्यकाल से संबंधित यहाँ दो घर हैं। एक दुमंजिला खण्डहर सा अप्रयोज्य मकान है, जहाँ 13 दिसंबर 1901 को उनका जन्म हुआ था। उनके पिता पंडित गौरी दत्त की ज्योतिष और संस्कृत के विद्वान के रूप में ख्याति थी। उनके सान्निध्य में ही इसी घर में पीतांबर जी ने संस्कृत के बहुत सारे ग्रन्थों का अध्ययन कर लिया था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा पास के ही एक पाठशाला में ही हुई थी। बाद में उन्होने श्रीनगर के गवर्नमेंट हाई स्कूल में दाखिला ले लिया था। यहाँ रहते हुये उनकी साहित्यिक प्रतिभा का विकास हुआ और यहीं से ' मनोरंजनी' नामक एक हस्तलिखित साहित्यिक पत्रिका का संपादन किया। किशोरावस्था में उनका कुटुंब पास के नये मकान में आ गया।

यह मकान भी दुमंजिला है और अभी अच्छी हालात में है। इस घर में कुछ समय रहने के पश्चात पीतांबर दत्त जी लखनऊ चले गये और वहाँ के कालीचरण हाई स्कूल में दाखिला ले लिया। हाई स्कूल में उनके हेडमास्टर थे हिंदी के प्रख्यात विद्वान, बाबूश्याम सुंदर दास। उल्लेखनीय है कि पीतांबर दत्त जी के सहयोग से ही बाबू श्याम सुंदर दास हिंदी के कई उत्कृष्ट ग्रन्थों को तैयार कर सके थे। सन 1922 में उच्च शिक्षा के लिये उन्होने डी ए वी कालेज कानपुर में दाखिला ले लिया था। वहाँ से उन्होने पहाड़ पर केन्द्रित पत्रिका ' हिलमैन' निकालना आरंभ किया। सन 1928 में जब बनारस हिंदू विश्व विद्यालय में एम ए हिंदी का पहला सत्र आरंभ हुआ तो उनका दाखिला पहले ही दल में हो गया। एम ए करने के पश्चात,सन 1930 में वहीं पर वह प्रवक्ता के पद पर लग गये थे। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में रहते हुये ही बाबू श्यामसुंदर दास के निर्देशन में सन 1933 में ' दि निर्गुण स्कूल आॅफ पोयट्री' पर डि लिट की उपाधि प्राप्त की। वह 'हिंदी काव्य में निर्गुण धारा' नाम से इसका हिंदी में अनुवाद भी कर रहे थे। कुछ ही हिस्सा रह गया था कि 24 जुलाई 1944 को इसी गाँव

लैंसडाउन में पीतांबर जी के नाम पर
पुस्तकालय और वृद्धाश्रम

पुस्तकालय के अन्दर
देवेन्द्र कुमार नैथानी के साथ

में ही उनका निधन हो गया था। गाँव के अन्दर स्थित इस घर में अभी भी उनके कुटुंब के लोग रहतें हैं। अगर कुटुंब में किसी पर पीतांबर दत्त बड़थ्वाल जी का असर पड़ा भी था तो वह थे जानकी प्रसाद बड़थ्वाल। वे भी साहित्य प्रेमी थे और कवितायें लिखा करते थे। जानकी प्रसाद जी भी अब इस दुनिया में नहीं हैं। लेकिन उनकी पत्नी उस वक्त गाँव में मौजूद थीं और सतीश चन्द्र जी ने मुझे उनसे मिलवाया भी था। सतीश चंद्र जी ने पीतांबर दत्त जी के नाम पर आसपास चल रहे संस्थानों की भी जानकारी दी। पौड़ी के आस पास दो महाविद्यालय उनके नाम पर हैं। देहरादून स्थित उत्तराखंड राज्य की हिंदी अकादमी उनके नाम पर है ही। इसके अतिरिक्त उन्होने यह रोचक जानकारी दी कि लैंसडाउन जैसी जगह में कुछ साहित्य प्रेमियों ने निरंतर संघर्ष करके , सरकार से पीतांबर दत्त की स्मृति में एक पुस्तकालय स्थापित करवा लिया है। इस सूचना के पश्चात हम लैंसडाउन जाने को उतावले हो गये। पाली गाँव से लैंसडाउन 12 किमी की दूरी पर है और वहां जाने को विविध साधन भी है। अगले दिन जब हम लैंसडाउन पहुँचे तो लैंसडाउन भ्रमण की बजाए, पीतांबर जी की स्मृति में बना पुस्तकालय देखना ही हमारी प्राथमिकता में था। लैंसडाउन बहुत छोटी जगह है। जहाँ एक ही मुख्य बाजार है। सो पुस्तकालय ढूढ़ना मुश्किल कार्य न था। लेकिन जब हम लोग वहाँ पहुँचे तो पुस्तकालय बंद था। आसपास पूछताछ करने से पता चला कि पुस्तकालय दो तीन घंटें बाद ही खुलेगा। पास ही स्थित एक रेस्तरां में चाय पीते हुये मैं रेस्तरां के मालिक से पुस्तकालय के बारे में पूछताछ करने लगा था कि संयोग से उसी रेस्तरां में चाय पीने के लिये देवेन्द्र कुमार नैथानी जी आ गये। मुझे पाली गाँव में ही सूचना मिल गई थी कि जिन लोगों ने पीतांबर दत्त बड़थ्वाल के नाम पर पुस्तकालय स्थापित करने के लिये संघर्ष किया उनमें देवेन्द्र कुमार नैथानी जी भी थे।

नैथानी जी पर नजर पड़ते ही रेस्तरां वाले ने उनकी ओर इशारा करते हुये बोल दिया कि पुस्तकालय का सारा इतिहास वही बतायेगें। नैथानी जी ने प्रसन्न भाव से हमारा स्वागत किया। देवेन्द्र कुमार नैथानी जी मूलतः पत्रकार और कवि हैं। हाल ही में उनका एक कविता संग्रह ' रास्ते का पेड़' आया है। वह एक अच्छे चित्रकार और छायाकार भी हैं।

लैंसडाउन में साहित्य और कला के हर आयोजनों में उनकी सक्रिय भागीदारी रहती है। पत्रकार अश्विनी कोटनाला (दिवंगत नवंबर 2016) , अनूप खण्डेलवाल और लैंसडाउन के कुछ और सांस्कृतिक कर्मियों के साथ मिल कर उन्होने लैंसडाउन में पीतांबर दत्त बड़थ्वाल के नाम पर पुस्तकालय स्थापित करने का मुहिम चलाया था। उनका संघर्ष रंग लाया और दस बरस पूर्व लैंसडाउन के बीच बाजार में स्थित कैंट बोर्ड के एक भवन में उनके नाम पर पुस्तकालय स्थापित करवाने में वे लोग सफल हो गये। पहले पूरे भवन में पुस्तकालय चलता था । अब उसके आधे हिस्से में पीतांबर दत्त बड़थ्वाल के नाम पर वृद्धाश्रम बना दिया गया है जबकि आधे हिस्से में पुस्तकालय को सीमित कर दिया गया है।

राजधानियों और महानगरों की चकाचैंध से दूर , छोटे छोटे शहरों और कस्बों में रहने वाले साहित्यप्रेमियों के दिल में साहित्य और साहित्यकारों के प्रति कितना यह अनुराग रहता है, यह पुस्तकालय उसी का प्रमाण है। वास्तव में समाज में साहित्य की लौ इन साहित्यप्रेमियों एवं रचनाकरों के निस्वार्थ प्रेम से ही जल रही है। यही सकरात्मक भाव लेकर हम अगले दिन लैंसडाउन से देहरादून वापस आ गयें।

रिपोर्ट

कबड्डी-एक सामूहिक खेल

जे.एस.ओबेरॉय, अधिकारी सर्वेक्षक
(उत्तराखण्ड जी डी सी)

कबड्डी एक सामूहिक खेल है । इस खेल में अपनें विरोधियों की कमियों की पहचान कर एवं अपने साथियों के सहयोग से विरोधी टीम को खेल के नियमों के तहत बांधते हुये बिना डरे और बिना घबराए उस पर जीत हासिल करने के गुण सीखने का मौका मिलता है।भारत के साथ साथ पड़ोसी देशों मे भी कबड्डी बडे पैमाने पर खेली जाती है। यह खेल अलग अलग नाम व नियमों के साथ खेला जाता है । पर खेल का मूल मंत्र एवं मूल भाव समान रहता है ।इस खेल मे एक खिलाडी विरोधी दल के पाले में 'कबड्डी- कबड्डी' या 'हू-तू-तू' दोहराते हुए जाता है और विरोधी दल के खिलाडियों को छूने की कोशिश करता है और वापिस अपने क्षेत्र मे आ जाता है ।यह सब कुछ एक ही सांस मे करना, और विरोधियों से बचकर वापस अपने पाले मे आना होता है।

माना जाता हैं कि इस खेल का उद्भव पौराणिक काल में हुआ था। पौराणिक काल में ऋषि मुनियों द्वारा चलाए जा रहे गुरूकुलो मे भी कबड्डी जैसा खेल खेले जाने के प्रमाण मिलते हैं। जहाँ शिष्य शारीरिक व्यायाम के लिए इसे खेलते थे ।

कबड्डी कि कुछ झलकियाँ

इससे मनुष्य मे आत्मरक्षा या मुश्किल हालात मे फंस कर अपने आपको सुरक्षित बाहर निकलने की क्षमता विकसित होती है ।कबड्डी शब्द मूलतः एक तमिल भाषा के 'काई-पीडी' से बना है जिसका अर्थ है- एक दूसरे का हाथ थामे रहना । कबड्डी पूरे भारत मे बहुत मशहूर है ।

कबड्डी मुख्य रूप से भारतीय उप महाद्वीप मे खेली जाती है । इसमें दो टीमों के बीच में स्पर्धा होती है। एक टीम का रेडर विपक्षी पाले मे जाकर वहाँ मौजूद खिलाडियों को छूने का प्रयास करता है । इस दौरान विपक्षी टीम के स्टापर, रेडर को पकड कर, अपने पाले में वापस जाने से रोकते हैं ।

कबड्डी मैचों का आयोजन अलग अलग विभागों द्वारा किया जाता है । आजकल महिलाओं की भी काफी भागीदारी हो रही है । इन मैंचों में रेडर की होशियारी पर ही टीम की सफलता निर्भर करती है। प्रत्येक टीम मे 7 मुख्य खिलाड़ी एवं 5 रिज़र्व खिलाडी होते है । मैच के आरंभ में टॉस होता है और टॉस जीतने वाली टीम को ही यह तय करने का मौका मिलता है कि उसे पहले रेड करना है या नहीं।

जब भी स्टॉपर किसी रेडर को वापिस जाने से रोक पाने मे सफल होते है तो उन्हे अंक मिलता है और अगर रेडर किसी स्टापर को छूकर अपने पाले मे पहुँच जाता है तो उसकी टीम को अंक मिल जाता है और जिस स्टॉपर को उसने हाथ लगाया होता है उसको आउट होकर कोर्ट से बाहर जाना पड़ता है ।

इसी तरह से बारी-बारी रेडर रेड करते हैं और स्टापर उनको पकड़ने का प्रयास करते हैं ।इस वर्ष कबड्डी प्रतियोगिता का आयोजन दिनाक 19 एवं 20 फरवरी 2020 को सर्वे ऑफ़ इण्डिया के जीबीओ कम्पाउण्ड, सर्वे चैक, केन्द्रीय सरकारी कर्मचारी कल्याण समन्वय समिती के तत्वावधान मे उत्तराखण्ड एंव पश्चिमी उत्तर प्रदेश भू स्थानिक आकड़ा केन्द्र ्रभारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा प्रायोजित किया गया । भारत के महासर्वेक्षक ले0 जनरल0 गिरीश कुमार वी.एस.एम.मुख्य अतिथि रहे एवं उन्ही के कर कमलों द्वारा विजेताओं को पुरस्कार वितरण किया गया ।

दिनांक 19.02.2020 को कबड्डी प्रतियोगिता का शुभारम्भ श्री आर.के.मीणा, निदेशक उत्तराखण्ड एवं पश्चिम उत्तर प्रदेश भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र, ने ओ. एफ. डी तथा सी .क्यू. ए. आई के खिलाडियों से परिचय करके किया। प्रतियोगिता कें मुख्य संयोजक श्री एस.चन्द्रा द्वारा कुशलपूर्वक आयोजन किया गया। कुल टीमों में ओ.एफ.डी तथा सी.क्यू.ए.आई.,सर्वे ऑफ़ इंडिया की मुख्य टीमों के अतिरिक्त ओ.एफ.डी तथा ओ.एल.एफ की महिला टीम ने भी भाग लिया ।

20.02.2020 को समापन के अवसर पर मुख्य अतिथि भारत के महासर्वेक्षक ले. ज. सेवानि. गिरीश कुमार,वी.एस.एम., अतिथि निदेशक , एन.जी.डी.सी श्री एस.वी.सिंह, निदेशक अंकीय मानचित्रण केन्द्र, श्री राजीव श्रीवास्तव, जी एण्ड आर. बी.कार्यभारी निदेशक श्री नीरज गुर्जर, कार्यक्रम समन्वयक, निदेशक उत्तराखण्ड एवं पश्चिम उत्तर प्रदेश भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र, श्री आर.के.मीणा, केन्द्रीय सरकारी कर्मचारी कल्याण समन्वय समिति के सचिव श्री मोहन राम जी के अतिरिक्त, जी.बी.ओ.परिसर में अधिकारी कर्मचारियों ने अपनी उपस्थिति देकर प्रतियोगिता के माहौल को सुंदर बनाया। भारत के महासर्वेक्षक ने सभी प्रतियोगियों की खेल भावना व सतीश चंद्र, संयोजक केन्द्रीय सरकारी कर्मचारी कल्याण समन्वय समिती एवं प्रबन्धक जे .एस. ओबेरॉय की भूरि भूरि प्रंशसा की।

कैंडिडेट

हास्य कविता

रिटायर्ड सु .मेजर प्रेम
पिता कु .पायल आर्य सर्वेक्षक

वोट मांगने आ रहे थे कैंडिडेट।

गंदी गलियों के भी चक्कर काटे जा रहे थे कैंडिडेट।

दुर्गन्ध से बुरा हाल था पर नाक पर रुमाल भी नहीं रखे हुए थे कैंडिडेट।

मुस्कुराये जा रहे थे कैंडिडेट।

हाथ जोड़े थके नहीं जा रहे थे कैंडिडेट।

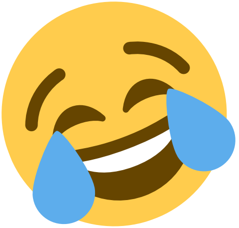

जनता को बरगलाये जा रहे थे कैंडिडेट।

रोटी कपडा और मकान हवा में बांटे जा रहे थे कैंडिडेट।

जनता को सितारों की दुनिया की सैर कराये जा रहे थे कैंडिडेट।

कुल मिलाकर गरीबी हटाये जा रहे थे कैंडिडेट।

सबको अमीर बनाये जा रहे थे कैंडिडेट।

अपनी खूबियाँ गिनवाए जा रहे थे कैंडिडेट।

विपक्ष पर व्यंग कसे जा रहे थे कैंडिडेट।

जनता को आकर्षित किये जा रहे थे कैंडिडेट।

साथ ही तेरी गलियों में न रखेंगे कदम आज के बाद गीत
मन ही मन गाये जा रहे थे कैंडिडेट।

हाय कैंडिडेट हाय कैंडिडेट।

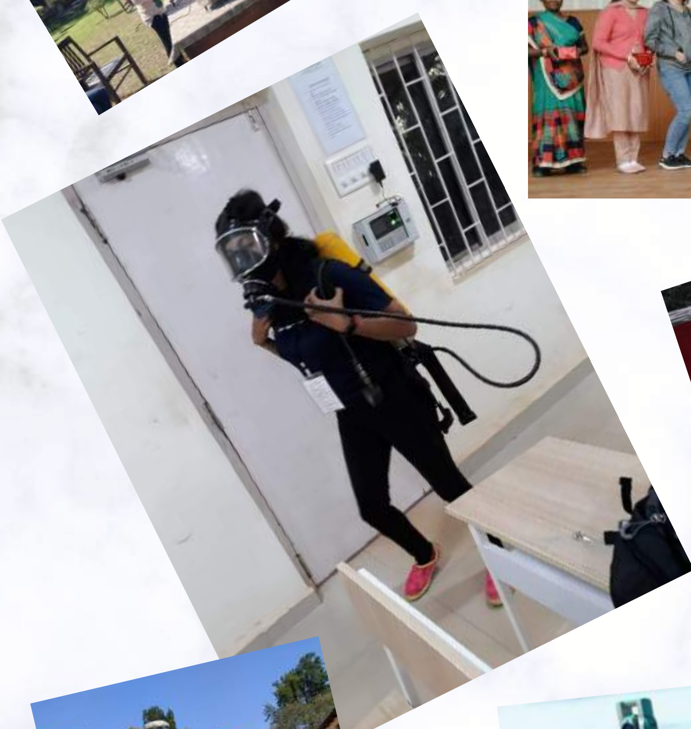

BADMINTON
TOURNAMENT 2019-20
DATE : 27th DECEMBER, 2019 TO 2nd JANUARY, 2020
Sachivalaya Welfare Committee, General Administration Department, Government of Gujarat

ALL INDIA CIVIL SERVICES
BADMINTON
TOURNAMENT 2019-20
DATE : 27th DECEMBER, 2019 TO 2nd JANUARY, 2020
VENUE : SACHIVALAYA GYMKHANA, SECTOR 21, GANDHINAGAR, GUJARAT
Sachivalaya Welfare Committee, General Administration Department, Government of Gujarat

पंडित नैन सिंह सभागार
PUNDIT NAIN SINGH AUDITORIUM

झलक

2021

झलक

झलक

झलक

हिंदी है
अपनी भाषा

हिंदी है अपना
अभिमान

झलक

झलक

ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा
भारतीय सर्वेक्षण विभाग
देहरादून